Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ
وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ

(आले इमरान : 191)

अनुवाद : नि:सन्देह आसमानों ज़मीन की पैदाइश में और रात और दिन के अदलने बदलने में साहब-ए-अक़ल लोगों के लिए निशानियां हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-29

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

1 मोहर्रम 1444 हिज्री कमरी, 20 वफ़ा 1402 हिज्री शम्सी, 20 जुलाई 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

क़र्ज़ में कमी करने की सिफ़ारिश

(2405) हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है उन्होंने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो शहीद हुए और बाल बच्चे और क़र्ज़ छोड़ गए। मैं ने क़र्ज़-ख़्वाहों से चाहा कि वह उनके क़र्ज़ से कुछ छोड़ दें। वह न माने तो मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से चाहा कि उनके पास इसकी सिफ़ारिश फ़रमाएं। वह फिर भी न माने। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अपनी ख़जूरों को किसम वार तर्तीब दो और उन्हें अलैहदा अलैहदा करदो। अज़क बिन ज़ैद किस्म की खजूर अलग हो और लेन अलग हो और अजवा अलग हो। फिर मेरे आने तक क़र्ज़-ख़्वाहों को ले आओ। मैं ने ऐसा ही किया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम आए और ख़जूरों के ढेर पर बैठ गए और हर शख़्स को माप कर देते गए यहां तक कि हर शख़्स ने अपना हक़ पूरा का पूरा पालिया और खजूर वैसी ही रही, गोया कि उसे किसी ने हाथ तक नहीं लगाया।

★ हदीस के रावी हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो के पिता साहिब।

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताब अल्-इस्तकराज़, प्रकाशन 2008 कादियान)

क़ुरआन-ए-करीम दुनिया में न भी होता तब भी एक ही ख़ुदा की प्रसतिश होती

जब हम क़ानून-ए-क़ुदरत में नज़र करते हैं तो मानना पड़ता है कि ज़रूर एक ही ख़ालिक़ व मालिक है

कोई उसका शरीक नहीं, दिल भी उसे ही मानता है और दलायल क़ुदरत से भी इसी का पता लगता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

क़ुरआन-ए-करीम की तालीमों को अल्लाह तआला ने कई तरह पर मुस्तहकम किया ताकि किसी किस्म का शक न रहे और इसी लिए शुरू में फ़रमाया لَا رَيْبَ فِيْهِ (अल् बकरः : 3) यह इस्तहकाम कई तौर पर किया गया है।

प्रथम। क़ानून-ए-क़ुदरत से उस्तवारी और इस्तेहकाम क़ुरआनी तालीमों का किया गया। जो कुछ क़ुरआन-ए--करीम में बयान किया गया है क़ानून-ए-क़ुदरत उसको पूरी मदद देता है। मानो जो क़ुरआन में है वही किताब--ए-मकनून में है। इस का राज़ अंबिया अलैहिम अस्सलाम की पैरवी के कारण समझ में नहीं आ सकता और यही वह रहस्य है जो لَا يَمَسُّهٗٓ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ (अल् वाकिया : 80) में रखा गया है। उद्देश्य पहले क़ुरआनी तालीम को क़ानून-ए-क़ुदरत से मुस्तहकम किया है। उदाहरणतः क़ुरआन-ए-करीम ने अल्लाह तआला की सिफ़त वहिदा, लाशरीक बतलाई। जब हम क़ानून-ए-क़ुदरत में नज़र करते हैं तो मानना पड़ता है कि ज़रूर एक ही ख़ालिक़ व मालक है। कोई उसका शरीक नहीं। दिल भी उसे ही मानता है और दलायल क़ुदरत से भी इसी का पता लगता है, क्योंकि हर एक चीज़ जो दुनिया में मौजूद है वह अपने अंदर करोयत रखती है। जैसे पानी का क़तरा अगर हाथ से छोड़ें तो वह करवी शक्ल का होगा और कर्वी शक्ल तौहीद को मुस्तल्ज़िम है और यही वजह है कि पादरियों को भी मानना पड़ा कि जहां तस्लीस की तालीम नहीं पहुंची वहां के रहने वालों से तौहीद की पुर्सिश होगी। इसलिए पादरी फ़ंडर ने अपनी तसनीफ़ात में इस अमर का एतराफ़ किया है। इस से मालूम होता है कि क़ुरआन-ए-करीम दुनिया में न भी होता तब भी एक ही ख़ुदा की प्रसतिश होती। इस से मालूम हुआ कि क़ुरआन-ए-करीम का वर्णन सही है, क्योंकि उसका नक़्श इन्सानी फ़ित्रत और दिल में मौजूद है और दलायल क़ुदरत से इस की शहादत मिलती है। बर-ख़िलाफ़ उस के इंजील तस्लीस का नक़्श न दिल में है न कानून-ए-क़ुदरत उसका समर्थक है।

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 466 प्रकाशन 2018 कादियान) ★ ★ ★

दुनिया की हर चीज़ मजमूई तौर पर ख़ुदा की तस्बीह करती है और अकेले अकेले भी ख़ुदा की तस्बीह करती है

हर चीज़ में ख़ुदा की सिफ़ात की झलक है, ख़ुदा की सत्तारी, ग़फ़्फ़ारी, उसकी ख़लक़, उसकी मल्क, इत्यादि समस्त सिफ़ात हर एक चीज़ में पाई जाती हैं

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत बनी इसराईल 45 تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ إِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا की तफ़सीर करते हुए फ़रमाते हैं :

इस आयत में फ़रमाया कि दुनिया को अगर मजमूई नज़र से देखा जाए तो वह भी ख़ुदा के वाहिद होने पर दलालत करती है और इस की एक एक चीज़ को देखा जाए तो वह अलैहदा अलैहदा भी इस बात पर दलालत करती है कि ख़ुदा वाहिद है।

إِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ में उसके एक एक के तस्बीह करने का वर्णन है और पहले जुमले में मजमूई तौर पर तौहीद ज़ाहिर करने का इशारा है। अन्यथा अगर تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ में भी एक एक दिन तौहीद पर दलालत करना उद्देश्य होता तो बाद में यह जुमला न आता। अतः इस जुमले का दुबारा वर्णन करना बताता है कि पहले जुमले में दुनिया की समस्त चीज़ों का मजमूई तौर हर तौहीद साबित करना ज़ाहिर किया गया है और दूसरे जुमले में दुनिया की हर एक चीज़ का अलैहदा अलैहदा तौहीद की दलील होना बताया गया है। दुनिया की वस्तुओं को देख लो एक दूसरे से कैसी वाबस्ता हैं। कुछ चीज़ें आपस में हज़ारों लाखों करोड़ों मील पर होती हैं लेकिन सब का वजूद एक दूसरे से वाबस्ता होता है और सब आपस में एक निज़ाम में

शेष पृष्ठ 8 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

मक्का से निकलने से पहले क़ुरैश ने काअबा में जा कर दुआ की कि "हे ख़ुदा हम दोनों फ़रीक़ों में से जो गिरोह हक़ पर क़ायम है और तेरी नज़रों में ज़्यादा शरीफ़ और ज़्यादा अफ़ज़ल है तू उस की सहायत फ़र्मा और दूसरे को ज़लील-ओ-रुस्वा कर।"

जंग-ए-बदर के लिए कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की तैयारी की मज़ीद तफ़सीलात तथा लश्कर-ए-इस्लामी की मदीना से रवानगी

मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि वह तुम्हें (उम्मया बिन खलफ को) क़तल करने वाले हैं

इबतेदा में मक्की लश्कर की संख्या तेराह सौ थी लेकिन बनू ज़ुहरा और बनू अदी के लोग रास्ते में इस लश्कर से अलैहदा हो गए इस तरह क़ुरैश के लश्कर की संख्या साढ़े नौ सौ या एक रिवायत के मुताबिक़ एक हज़ार रह गई

ज़्यादा-तर रिवायात में मुस्लमानों की संख्या तीन सौ तेराह वर्णन हुई है

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह दुआ की कि हे अल्लाह ये नंगे-पाँव हैं उनको सवारियां अता फ़र्मा और ये नंगे बदन हैं उन्हें लिबास अता फ़र्मा, ये भूखे हैं उन्हें सैर कर दे, ये तंगदस्त हैं उन्हें अपने फ़ज़ल से ग़नी कर दे,

इसलिए यह दुआ क़बूल हुई और ग़ज़व-ए-बदर से वापिस आने वालों में से कोई ऐसा शख़्स नहीं था कि अगर उसने सवारी पर जाना चाहा तो इसको एक दो ऐसे ऊंट न मिल गए हूँ जिन्हें वह इस्तमाल कर सके,

इसी तरह जिनके पास कपड़े नहीं थे उन्हें कपड़े मिल गए और सामान-ए-रसद उतना मिला कि खाने पीने की कोई तंगी न रही, इसी तरह जंगी क़ैदियों की रिहाई का इस क़दर मुआवज़ा मिला कि हर दौलतमंद हो गया।

श्रीमान शेख़ ग़ुलाम रहमानी साहिब आफ़ यू.के का जनाज़ा हाज़िर तथा श्रीमान ताहिर आग मुहम्मद साहिब आफ़ महूदी आबाद डोरी बुकीना फासो,
श्रीमान ख़्वाजा दाऊद अहमद साहिब कैनेडा, श्रीमान सय्यद तनवीर शाह साहिब और श्रीमान राना मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब मुरब्बी सिलसिला का वर्णन ख़ैरावर नमाज़े जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 16 जून 2023 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ
وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ○ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ○ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ○
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ○ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ
الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ○

कुफ़्फ़ार-ए-मक्का की जंग के लिए तैयारी के कुछ हालात वर्णन हुए थे। इस बारे में मज़ीद तफ़सील इस तरह है। एक शख़्स था उमय बिन खिलफ और दूसरा अबू-लहब। यह जब तैयारी हो रही थी उन्होंने कुछ जंग में जाने में ताम्मुल किया। इस की तफ़सील में यह लिखा है कि इस जंग के लिए क़ुरैशी सरदार हर शख़्स को ले जाने के लिए तक़ाज़ा कर रहे थे लेकिन उम्मया बिन खिलफ जंग पर जाने से गुरेज़ कर रहा था।

मक्का का एक सरदार उक़बा बिन अबू मुईत उम्मया के पास आया और उसके पास ख़ुशबू दान और धोनी रखकर बोला कि अबू अली तुम ये औरतों वाली ख़ुशबू की ध्वनि लो क्योंकि तुम भी औरतों में से हो तुम्हारा जंग से किया काम।

(सबलुल हुदा वल्-रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 22, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ अबुजहल उमय्या के पास आया और इसको कहा कि तुम मक्का के सरदार और मुअज़्ज़िज़ लोगों में से एक हो। अगर लोगों ने तुम्हें जंग से पीछे हटता हुआ देख लिया तो वह भी रुक जाऐंगे। इसलिए हमारे साथ ज़रूर निकलो चाहे एक दो दिन की मुसाफ़त तक चलो और इसके बाद वापस आ जाना। दरअसल उमय्या जंग पर जाने से इसलिए डर रहा था कि इस के क़तल के मुताल्लिक़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भविष्यवाणी फ़र्मा रखी थी और उसका उस को इलम था। इसलिए बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो अमरी की नीयत से गए और वह उमय्या बिन खलफ के पास उतरे। उनकी पुरानी वाक़फ़ीयत थी। उमय्या की आदत थी कि जब शाम की तरफ़ जाता था और मदीने से गुज़रता तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ठहरता। उमय्या ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से जो उमरा करना चाहते थे, कहा कि अभी इंतेज़ार करो। जब दोपहर हो और लोग ग़ाफ़िल हो जाएं तो जा कर तवाफ़ कर लेना। मुस्लमानों की मुख़ालेफ़त की वजह से यह एहतियात की गई थी। दोपहर हुई तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने तवाफ़ शुरू किया। इसी अस्ना में कि तवाफ़ कर रहे थे । क्या देखते हैं कि अब्बू जहल है। वह कहने लगा ये कौन है जो काअबा का तवाफ़ कर रहा है? हज़रत साद रज़ियल्ला-हु अन्हो ने कहा मैं साद हूँ। अबुजहल बोला क्या तुम ख़ाना काअबा का तवाफ़ अमन से करोगे हालाँकि तुमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) और उस के साथियों को पनाह दी है। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हाँ। तब इन दोनों ने एक दूसरे को बुरा-भला कहा अर्थात अबुजहल ने उनको चैलेंज दिया कि तुम किस तरह तवाफ़ कर सकते हो, तुम तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पनाह देने वालों में से हो। बहरहाल उन्होंने कहा हाँ। मैंने पनाह भी दी है और मैं तवाफ़ भी करूँगा। आपस में एक दूसरे को बुरा-भला कहना शुरू किया। उमय्या ने हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि साद! अबुल हकम, या अबुजहल की कुनिय्यत थी, इस पर अपनी आवाज़ ऊंची न करो क्योंकि वह अहल-ए-वादी का सरदार है।

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा ख़ुदा की कसम अगर तुमने बैतुल्लाह का तवाफ़ करने से मुझे रोका तो मैं इस से ज़्यादा सख़्त रोक पैदा करूँगा वह यह कि तुम लोगों का तिजारती रास्ता जो मदीने से गुज़रता है अर्थात शाम की तिजारत का रास्ता, वह बंद कर दूंगा। हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि उमय्या हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो से यही कहता रहा कि अपनी आवाज़ को बुलंदन करो और उनको रोकता रहा। हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ुस्से में आए और उमय्या को कहने लगे मुझे तुम रहने दो और इस की ताईद-ओ-हिमायत मत करो अर्थात अबुजहल की ताईद न करो।

मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि वह तुम्हें क़तल करने वाले हैं। अर्थात तुम्हारे क़तल होने की भविष्यवाणी की है। एक दूसरी रिवायत में है कि वे लोग अर्थात मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी तुम्हें क़तल करने वाले हैं। उमय्या ने कहा क्या मुझे? हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हाँ तुझे। फिर उमय्या ने कहा कि क्या मक्के में? तो साद ने कहा यह मैं नहीं जानता। यह सुनकर उमय्या बोला ख़ुदा की क़सम मुहम्मद ज बबात कहते हैं (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) तो झूठी बात नहीं कहते। फिर वह अपनी बीवी के पास वापस आया और कहने लगा कि क्या तुम्हें इलम है कि मेरे यसरबी भाई ने मुझसे क्या कहा है? उसने पूछा क्या कहा है। उमय्या ने कहा कहता है कि उसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना है कि वह कहते हैं कि वह मुझे क़तल करने वाले हैं। उसकी बीवी ने कहा अल्लाह की क़सम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो झूठी बात नहीं किया करते। यह वह भविष्यवाणी थी जिससे उमय्या ख़ौफ़ज़दा था और मुस्लमानों से जंग के लिए नहीं जाना चाहता था। हज़रत अबदुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि वह जब बदर की तरफ़ निकले और मदद तलब करने के लिए फ़र्यादी आया तो उमय्या की बीवी ने उसे कहा कि क्या वह बात तुम्हें याद नहीं जो तुम्हारे यसरबी भाई ने तुमसे कही थी तो उसने चाहा कि न निकले परंतु अबुजहल ने उसे कहा कि तुम इस वादी के रसा में से हो तो एक दो दिन के लिए ही साथ चलो। इसलिए वह उनके साथ दो दिन के लिए चला गया और अल्लाह तआला ने उस को क़तल करा दिया।

(सही अल् बुख़ारी, किताब अल् मनाकिब, बाब अलामत नबुव्वत फ़ील इस्लाम हदीस 3632)(सही अल् बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, बाब ذکر النبیﷺ من یقتل ببدر हदीस 3950)

कुछ सीरत निगारों ने यह नुक्ता भी उठाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि उसको क़तल करेंगे जबकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो उस कोक़त्ल नहीं किया था तो वज़ाहत करने वाले यह कहते हैं कि अर्थ यह था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उसके क़तल का सबब बनेंगे अन्यथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिवाए उमय्या बिन खलफ के भाई उबै बिन खलफ के किसी को क़तल नहीं किया। उस को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग अहद में क़तल किया था। फिर वज़ाहत करने वाले ही कहते हैं कि हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने उमय्या को यह कहा हो कि मुहम्मद सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी तुम्हें क़तल करेंगे क्योंकि जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। रिवायत में यह भी आता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमया आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथी क़तल करेंगे।

(ग़ज़वात अन्नबी तालीफ़ अल्लामा अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी,अनुवादक पृष्ठ 70 दारुल इशाअत कराची 2001ई.) बहरहाल यह क़तल हुआ और इस में बेहस की ज़रूरत नहीं कि किस ने क़तल किया। यह भविष्यवाणी थी जो पूरी हो गई।

इसी तरह अबूलहब भी जंग पर जाने से ख़ौफ़ज़दा था और उसने अपनी जगह एक आदमी को रवाना किया था और ख़ुद जंग पर नहीं गया था। इस के जंग पर न जाने की वजह आतका बिंत अब्दुल्मुतलिब का ख़ाब था। वह कहा करता था कि आतका का ख़ाब ऐसे ही है जैसे कोई चीज़ हाथ से ले ली जाए। अर्थात यक़ीनी बात।

(सिब्बलुल् हुदा वाल् रिशाद , भाग 4, पृष्ठ 21, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस की तफ़सील यूं लिखी है कि "सिर्फ दो शख़्स थे जिन्हों ने" इस मुहिम में "शमूलियत से दीरी की और वह अबू लहब और उमय्या बिन खिलफ थे परंतु उनके ता की वजह भी मुस्लमानों की हमदर्दी नहीं थी बल्कि अबूलहब तो अपनी बहन आतका बिंत अब्दुल मुतलिब के ख़ाब से डरता था जो उसने ज़मज़म के आने से केवल तीन दिन पहले क़ुरैश की तबाही के मुताल्लिक़ देखा था और उमय्या बिन खलफ इस भविष्यवाणी की वजह से ख़ायफ़ था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस के क़तल होने के मुता-ल्लिक़ फ़रमाई थी और जिसका इलम उसे साद बिन मआज़ के ज़रीया मक्का में हो चुका था लेकिन चूँकि इन दो नामी रईसों के पीछे रहने से आम आम लोगों पर बुरा असर पड़ने का अंदेशा था इस लिए दूसरे क़ुरैश सरदारों ने जोश और ग़ैरत दिला दिला कर आख़िर इन दोनों को रज़ामंद कर लिया। अर्थात उमय्या तो ख़ुद तैयार हो गया और अबूलहब ने एक दूसरे शख़्स को काफ़ी रुपया दे करकेअपनी जगह खड़ा कर दिया। और इस तरह तीन दिन की तैयारी के बाद एक हज़ार से ज़ायद जाँबाज़ सिपाहियों का लश्कर मक्का से निकलने को तैयार हो गया।अभी यह लश्कर मक्का में ही था कि कुछ रसाए क़ुरैश को ख़्याल आया कि चूँकि बनू कनाना की शाख़ बनू बकर के साथ मक्का वाले के ताल्लुक़ात ख़राब हैं कहीं ऐसा न हो कि उनकी गैर-हाज़िरी से फ़ायदा उठा कर वह उनके पीछे मक्का पर हमला कर दें और इस ख़्याल की वजह से कुछ क़ुरैश कुछ मुतज़ल्ज़ल होने लगे परंतु बनू कनाना के एक रईस सुराक़ा बिन मालिक बिन जाशम ने जो उस वक़्त मक्का में था उनको इतमेनान दिलाया और कहा कि मैं इस बात का ज़ामिन होता हूँ कि मक्का पर कोई हमला नहीं होगा बल्कि सुराक़ा को मुस्लमानों की मुख़ालफ़त का ऐसा जोश था कि क़ुरैशक ी इआनत में वह ख़ुद भी बदर तक गया लेकिन वहां मुस्लमानों को देख कर उस पर कुछ ऐसा रोब तारी हुआ कि जंग से पहले ही अपने साथियों को छोड़ कर आया ..

मक्का से निकलने से पहले क़ुरैश ने काबा में जा कर दुआ की कि "हे ख़ुदा हम दोनों फ़रीक़ों में से जो गिरोह हक़ पर क़ायम है और तेरी नज़रों में ज़्यादा शरीफ़ और ज़्यादा अफ़ज़ल है तू उस की नुसरत फ़र्मा और दूसरे को ज़लील-ओ-रुस्वा कर।"

इसके बाद कुफ़्फ़ार का लश्कर बड़े जाह व हशम के साथ मक्का से रवाना हुआ। "(सीरत ख़ातमन नबियीन अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 350-351)अपनी तबाही की तो ख़ुद उन्होंने दुआ कर ली।

आरंभ में मक्की लश्कर की संख्या तेराह सौ थी।

(الرحیق المختوم،صفحہ 281،مکتبۃ السلفیۃ لاھور 2000ء)

यह हवाला मिलता है लेकिन बनू ज़ुहरा और बनू अदी के लोग रास्ते में इस लश्कर से अलैहदा हो गए इस तरह क़ुरैश के लश्कर की संख्या साढ़े नौ सौ या एक रिवायत के मुताबिक़ एक हज़ार रह गई। इसके बाद उनके पास एक सौ या कुछ के नज़दीक दो सौ घोड़े सात सौ ऊंट छः सौ ज़िरहें और दीगर सामान जंग भी उदाहर-णतः नेज़ा और तलवार और तीर कमान इत्यादि काफ़ी संख्या में मौजूद था।

(उद्धृत सीरतुन नब्विया लेइब्ने कसीर, पृष्ठ 248-249, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.) (उद्धृत सीरत ख़ातमन् नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम.ए, पृष्ठ 352)

सरदारान-ए-क़ुरैश की हलाकत के मुताल्लिक़ जुहीम बिन सलत का ख़ाब है, उसका भी वर्णन मिलता है। क़ुरैश वाले मक्का से निकले और जह्फ़ा में उतरे। जह्फ़ा मक्का से मदीना की जानिब करीबा बयासी मील के फ़ासले पर है। तो जुहीम बिन सलत ने लोगों से बयान किया कि मैं ने यह ख़ाब देखा है कि एक शख़्स घोड़े पर सवार आया और एक ऊंट भी इस के साथ है और वह शख़्स कह रहा है कि उत्बा बिन रबीया का क़तल हुआ और शीबा बिन रबीया क़तल हुआ और अबुल हकम बिन हशशाम अर्थात अबुजहल क़तल हुआ और उमय्या बिन खलफ क़तल हुआ और अमुक अमुक और सरदार उन क़ुरैश में से जो लोग बाद में बदर में क़तल हुए सब के नाम लिए और फिर उस शख़्स ने जो आया था अपने ऊंट की गर्दन में नेज़ा मार कर हमारे लश्कर की तरफ़ छोड़ दिया तो हमारे लश्कर में से कोई ख़ेमा ऐसा न रहा जिसको इस ऊंट का ख़ून न लगा हो। जब यह ख़ाब अबुजहल ने सुना तो तम्सख़र और ग़ुस्से से कहने लगा। बनू मतलब में से यह एक और नबी पैदा हो गया है। कल अगर हमने जंग की तो ख़ूब मालूम हो जाएगा कि कौन क़तल होता है।

(अल्सीरतुल अल्नब्विया यह हशशाम, पृष्ठ 422-423 वर्णन रोया आतका बिंत अब्दुल मुतलब, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

बहरहाल जैसा कि वर्णन हो चुका है अबूसुफ़ियान तो रास्ता बदल के चला गया था। उसने अबुजहल को पैग़ाम भेजा कि जंग करने की ज़रूरत नहीं है वापस आ जाओ और जैसा कि पिछली दफ़ा भी वर्णन हुआ था कि ख़ुद अबूसुफ़ियान एहतेया-तन क़ाफ़ले से आगे बढ़कर पानी के पास उतरा और वहां किसी आदमी से पूछा कि तू ने किसी को आते-जाते देखा है। उसने कहा मैं ने कोई ख़िलाफ़ मामूल आदमी को तो नहीं देखा अलबत्ता मैं ने दो सवार देखे हैं जिन्हों ने अपने ऊंट उस टीले के पास बिठाए और मश्कीज़े में पानी भर कर चले गए। अबूसुफ़ियान उनके ऊंट बिठाने की जगह आया और उनके ऊंटों की मेंगनियां उठा कर तोड़ें तो उनमें खजूर की गुठलियां

थीं। यह देखकर ख़ुदा की कसम! यह तो यसरब का चारा है। वह तेज़ी से अपने साथियों की तरफ़ भागा और अपने ऊंटों के मुँह पर ज़रबें लगा कर उन्हें रास्ते से फेर दिया और साहिल समुंद्र की तरफ़ निकल गया और बदर को अपने दाएं जानिब छोड़कर तेज़ी से रवाना हो गया।

(उद्धृत सीरतुन् नब्विया लेइब्ने हशशाम, पृष्ठ 422 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

यह मैं पिछले ख़ुत्बे में पहले वर्णन कर चुका हूँ। बहरहाल जब अबूसुफ़ियान को यक़ीन हो गया कि उसने अपने क़ाफ़िले को महफ़ूज़ कर लिया है तो उसने क़ुरैश को यह पैग़ाम भेजा कि तुम केवल अपना क़ाफ़ला आदमी और माल बचाने के लिए निकले थे तो अल्लाह तआला ने उसे बचा लिया है इसलिए तुम वापस लौट आओ लेकिन अबूसुफ़ियान का पैग़ाम सुन कर अबुजहल ने ख़ुदा की कसम! हम हरगिज़ वापस नहीं जाऐंगे यहां तक कि हम बदर के मुक़ाम तक पहुंच जाएं।

बदर अरब के मेलों में से एक मेले का मुक़ाम भी था जहां उन के लिए हर साल बाज़ार लगता था।

उसने कहा कि हम वहां तीन दिन क़ियाम करेंगे, ऊंट ज़बह करेंगे, खाना खिलाएंगे, शराब पिलाऐंगे, हमारी कनीज़ें हमारे सामने गीत गाएँगी। सारा अरब हमारे मुताल्लिक़ और हमारे सफ़र और हमारे लश्कर के मुताल्लिक़ सुनेगा फिर वह हमेशा हमसे ख़ौफ़ज़दा रहेंगे इसलिए बढ़ते चलो।

(सीरतुन नब्विया ले इब्ने हशशाम, पृष्ठ 423दारुल कुतुब इल्मिया 2001 ई.)

एक रोब क़ायम करने के लिए उसने कहा कि हमने वहां जंगी लश्कर लेकर जाना ही जाना है। उनके साथ क़बीला बनू ज़ुहरा भी था। इस के बारे में लिखा है उसने वापस आने का फ़ैसला किया। अबूसुफ़ियान को जब यह पैग़ाम मिला तो यह सुनकर अख़नस बिन शरीक ने जो बनू ज़ुहरा का हलीफ़ था कहा हे बनू ज़ुहरा अल्लाह ने तुम्हारे अम्वाल भी बचा लिए हैं और तुम्हारे साथी मख़रमा बिन नौफ़ल को भी निजात बख़शी है। यह अबूसुफ़ियान के क़ाफ़िले में शामिल था। तुम घरों से इसलिए निकले थे कि मख़मर को बचाओ और अपने माल की हिफ़ाज़त करो। तुम बुज़दिली का इल्ज़ाम मुझ पर आयद करदो। लोग यही कहेंगे नाँ कि बुज़दिल हो, जंग छोड़ रहे हो। तो कहता है यह इल्ज़ाम मुझ पर आयद कर दो और वापस चलो क्योंकि नुक़्सान न होने की सूरत में तुम्हें निकलने की कोई ज़रूरत नहीं। अबुजहल की बातों में न आओ। इसलिए वह वापिस चले गए और बनू ज़ुहरा का कोई फ़र्द जंग में शरीक न हुआ। इसी तरह बनू अदी बिन काब से भी कोई आदमी जंग के लिए न गया और वापस चला गया। लश्कर क़ुरैश आगे बढ़ता गया

हज़रत अबू तालिब के बेटे तालिब भी इस लश्कर में शरीक थे।

क़ुरैश के कुछ लोगों के साथ उनकी गुफ़्तगु हुई। क़ुरैश ने तंज़न कहा ख़ुदा की कसम हे बनी हाशिम हम जानते हैं कि अगरचे तुम हमारे साथ निकल आए हो लेकिन तुम्हारी दिल की हमदर्दीयां मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हैं। यह बात सुनकर तालिब अपने कई साथियों के हमराह वापस मक्का लौट आए। एक रिवायत में यह वर्णन मिलता है कि तालिब बिन अबू तालिब जबरन मुशरेकीन के साथ बदर गया था परंतु न क़ैदियों में इसका पता चला और न मक़्तूलीन में मिला और अपने घर भी वापस नहीं लौटा। (तारीख़ तिबरी अनुवादक, भाग पृष्ठ 137 नफ़ीस अकैडमी कराची) तिबरी का यह हवाला है।

बहरहाल बाक़ी लश्कर जो कि अब तेराह सौ से कम हो कर क़रीबन एक हज़ार रह गया था उसने अपना सफ़र जारी रखा यहां तक कि उन्होंने बदर के क़रीब एक टीले के पीछे जा कर डेरा डाल लिया।

(उद्धृत सीरतुल नब्विया लेइब्ने हशशाम, पृष्ठ 423 वर्णन रोया आतका बिंत अब्दुल मुतलिब, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना से रवानगी और मुस्लमानों के लश्कर की संख्या के बारे में लिखा है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बारह रमज़ान दो हिज्री बरोज़ हफ़्ता मदीना से रवाना हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह तीन सौ से कुछ ऊपर अफ़राद थे जिन में 74 मुहाजेरीन और बाक़ी अंसार में से थे। यह पहला ग़ज़वा था जिसमें अंसार भी शामिल हुए थे। हज़रत उसमान बिन अफ़ान रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में ही रुकने का हुक्म दिया क्योंकि उनकी पत्नी हज़रत रुक़य्या बिंत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बीमार थीं। एक रिवायत में है कि हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद बीमार थे लेकिन ज़्यादा मारूफ़ रिवायत यही है कि उनकी पत्नी श्रीमति बीमार थीं। कुछ और ज़्यादा-तर रिवायात में मुस्लमानों की संख्या तीन सौ तेराह वर्णन हुई है।

सही बुख़ारी में वर्णन है कि हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इन सहाबा ने जो ग़ज़व-ए-बदर में शरीक हुए थे मुझे बताया कि वे संख्या में इतने ही थे जितने तालूत के वे साथी थे जो उनके साथ दरिया से पार हुए थे अर्थात तीन सौ दस से कुछ ऊपर। हज़रत बरा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे ख़ुदा की कसम तालूत के साथ दरिया से केवल मोमिन ही पार गए थे।

(उद्धृत अल्तबकातुल कुबरा लेइब्ने साद, भाग 2, पृष्ठ 8, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.) (सही अल् बुख़ारी, किताब अल्मग़ाज़ी, बाब अद्दार अस्हाब बदर, हदीस 3957)(ग़ज़वातु उन्नबी अज़ अलामा बुरहान हल्बी, अनुवादक, पृष्ठ 72 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2001 ई.)

एक रिवायत में वर्णन है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को गिनती करने का हुक्म दिया। उन्होंने गिनती के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़बर दी कि तीन सौ तेराह हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया तालूत के साथियों जितने हैं।

(सिब्बलुल हुदा वल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 25, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु जंग-ए-बदर में मुस्लमानों की संख्या के बारे में फ़रमाते हैं : "हम देखते हैं कि बदर के अवसर पर सहाबा 313 की संख्या में निकले थे अगर वे बजाय313 के छः या सात सौ की संख्या में निकलते और वह सहाबा भी शामिल हो जाते जो मदीना में ठहर गए थे तो लड़ाई उन के लिए ज़्यादा आसान हो जाती परंतु ख़ुदा तआला ने मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो इस जंग के मुताल्लिक़ बता दिया लेकिन साथ ही मना भी फ़र्मा दिया कि जंग के मुताल्लिक़ किसी को बताना नहीं और इस की वजह यह थी कि अल्लाह तआला कुछ पिछली भविष्यवाणियों को पूरा करना चाहता था।

उदाहरणतः सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की संख्या तीन सौ तेराह थी और बाइबल में यह भविष्यवाणी मौजूद थी कि जो वाक़िया जदऊन के साथ हुआ था वही वाक़िया मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को पेश आएगा और जब जदावन नबी अपने दुश्मन से लड़े थे तो उनकी जमाअत की संख्या 313 थी। अब अगर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को मालूम हो जाता कि हम जंग के लिए मदीना से निकल रहे हैं तो वह सारे के सारे निकल आते और उनकी संख्या 313 से ज़्यादा हो जाती। ईसी हिक्मत के अधीन अल्लाह तआला ने इस अमर को मख़फ़ी रखा ताकि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की संख्या 313 से ज़्यादा न होने पाए क्योंकि 313 सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो का जाना ही भविष्यवाणी को पूरा कर सकता था। इस लिए ज़रूरी था कि जंग की ख़बर को मख़फ़ी रखा जाता और मैदान-ए-जंग में पहुंच कर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को बताया गया कि तुम्हारा मुक़ाबला लश्कर-ए-क़ुरैश से होगा।"

(एक आयत की पुरमआरिफ़ तफ़सीर, अनवारुल उलूम, भाग 18, पृष्ठ 619)

एक महिला थीं उम्मे वर्क़ा बिंत नौफ़ल उनके जज़बा जिहाद के बारे में वर्णन आता है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर की जानिब रवाना होने लगे तो हज़रत उम्मे वरकः रज़ियल्लाहु अन्हा ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मुझे भी जिहाद पर जाने की इजाज़त दें मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ बिमारों की तीमार-दारी करूँगी शायद अल्लाह मुझे भी शहादत नसीब फ़र्मा दे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम अपने घर में ही ठहरी रहो तुम्हें अल्लाह तआला शहादत नसीब करेगा। इस सहाबिया ने क़ुरआन-ए-करीम पढ़ रखा था और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ ले जाया करते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका नाम शहीदा रख दिया था। इसलिए आम मुस्लमान भी उन्हें शहीदा ही कहने लगे थे। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर अखिलाफ़त्त में हज़रत उम्मे वरकः रज़ियल्लाहु अन्हा के एक ग़ुलाम और लौंडी ने उन्हें एक चादर में लपेट कर बेहोश कर दिया यहां तक कि वह वफ़ात पा गईं। इस ग़ुलाम और लौंडी के बारे में उन्होंने वसीयत कर रखी थी कि मेरी वफ़ात के बाद आज़ाद होंगे। क़ातिलों को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के हुक्म पर फांसी दे दी गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सच्च फ़रमाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि मेरे साथ चलो शहीदा से मिल करा आएं।

(उद्धृत अलसीरतुल हलबिया, भाग 2, पृष्ठ 197, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

जब उसके घर जाते थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इत्यादि को भी साथ ले जाया करते थे।

इस्लामी लश्कर की क़ुव्वत की तफ़सील इस तरह लिखी है। एक रिवायत के मुताबिक़ इस जंग में मुस्लमानों के पास पाँच घोड़े थे। कुछ के नज़दीक केवल दो घोड़े थे एक हज़रत मिकदाद रज़ियल्लाहु अन्हु का घोड़ा और एक हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु का। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि बदर के दिन हज़रत मिकदाद रज़ियल्लाहु अन्हु के इलावा कोई और घुड़सवार नहीं था। तो बहरहाल रिवायात में घोड़ों की ज़्यादा से ज़्यादा संख्या जो मिलती है वह पाँच की मिलती है। मुस्लमानों के पास साठ ज़िरहें थीं और ऊंटों की संख्या सत्तर या अस्सी थी जिन पर सब बारी बारी सवार होते थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मुर्सिद बिन अबू मुरसिद रज़ियल्लाहु अन्हु एक ऊंट पर बारी बारी सवार होते थे। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पैदल चलने की बारी आई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दोनों साथियों ने अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बारी में पैदल चलते हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सवार ही रहें। इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम मुझसे ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो और न ही मैं तुम दोनों की निसबत अज्र-ओ-सवाब से बेनयाज़ हूँ।

(उद्धृत अल्हलबी, भाग 2, पृष्ठ 204-205 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (उद्धृत सीरतुन नब्विया लेइब्ने कसीर, पृष्ठ 249 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2005 ई.)(ग़ज़वात उन्नबी तालीफ़ अल्लामा अली बिन बुरहानुद्दीन हलबी,अनुवादक पृष्ठ 76 दारुल इशाअत कराची 2001 ई.)(दलायल अल् नबी लिलबेहक़ी, भाग 3, पृष्ठ 32 प्रकाशन दारुल अर्यान लिल् तुरास् क़ाहिरा 1988 ई.)

मुझे भी जंग का, इस सफ़र का, मुहिम का अज्र-ओ-सवाब चाहिए।

सहाबा कराम रज़िवानुल्लाह अलेहिम के लिए रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दुआ थी। इसके बारे में लिखा है कि रास्ते में एक मुक़ाम से कूच करते वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के लिए यह दुआ की कि हे अल्लाह ये नंगे-पाँव हैं उनको सवारियां अता फ़र्मा और ये नंगे बदन हैं उन्हें लिबास अता फ़र्मा। ये भूखे हैं उन्हें सैर कर दे। ये तंगदस्त हैं उन्हें अपने फ़ज़ल से धनी कर दे। इसलिए ये दुआ क़बूल हुई और ग़ज़व-ए-बदर से वापिस आने वालों में से कोई ऐसा शख़्स नहीं था कि अगर उसने सवारी पर जाना चाहा तो उसको एक दो ऐसे ऊंट न मिल गए हूँ जिन्हें वह इस्तिमाल कर सके। इसी तरह जिनके पास कपड़े नहीं थे उन्हें कपड़े मिल गए और सामान-ए-रसद उतना मिला कि खाने पीने की कोई तंगी न रही। इसी तरह जंगी क़ैदियों की रिहाई का इस क़दर मुआवज़ा मिला कि हर ख़ानदान दौलतमंद हो गया।

(उद्धृत अल्सीतुल हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 204 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

कुछ लोग मदीना में रहे और कुछ कम उमर मुजाहेदीन थे जिनको आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वापस जाने का हुक्म दिया। इसके बारे में लिखा है कि बदर की तरफ़ निकलने का इरशाद हर चंद कि आम था लेकिन इस में ज़्यादा तैयारी का अवसर नहीं दिया गया। इसलिए रिवायत में आता है कि कुछ लोगों ने अर्ज़ किया कि मदीना से कुछ दूर हमारी सवारियां हैं हम वे ले आएं तो इरशाद हुआ कि नहीं। इसलिए उन लोगों को रहने दिया या वह बग़ैर सवारी के साथ रवाना हुए। यहां जो लिखा है यह आम था। यह आम तो था लेकिन फिर भी पाबंदियां थीं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अवसर भी नहीं दिया किसी को तैयारी का कि लोग ज़्यादा तैयार भी न हो जाएं। बहरहाल लिखा है कि इसी तरह कुछ मुख़लिस ऐसे थे कि जिन्हें किसी न किसी उज्र की बिना पर पीछे रहने की इजाज़त मिली जैसे हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन पहले हो चुका है। इसी तरह अब्बू अमामा बिन सालबा की माता बीमार थीं लेकिन उन्होंने साथ जाने का इरादा कर लिया था तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हुक्म दिया कि वह अपनी बीमार माता के पास ठहरें। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बदर से वापस तशरीफ़ लाए तो उनकी माता इंतेक़ाल कर चुकी थीं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनकी क़ब्र पर जा कर दुआ की। हज़रत साद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हु जो बड़े जोश-ओ-ख़ुरोश से लोगों को सफ़र के लिए तैयार कर रहे थे उनको साँप ने डस लिया तो वह मदीना में ही रहे। इसी तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रास्ते में एक मुक़ाम पर रुक कर जो कम उमर मुजाहेदीन थे उन्हें वापस जाने का इरशाद फ़रमाया। उनमें एक अमीर बिन अबी वक्क़ास भी थे। उन्होंने जब बच्चों की वापसी का हुक्म सुना तो रोना शुरू कर दिया जिस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें जंग पर जाने की इजाज़त दे दी। इसलिए वे जंग में शरीक हुए और जाम-ए-शहादत नोश किया। जिन कम उमर मुजाहेदीन को वापस भेजा गया उनमें उसामा बिन ज़ैद, राफ़े बिन ख़दीज, बुर-ए-बिन आज़िब, उसेद बिन ज़हुर, ज़ैद बिन अर्क़म और ज़ैद बिन साबित शामिल थे।

(उद्धृत अल् हलबिया, भाग 2, पृष्ठ 202, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (अल् बिदाया वाल् नहाया, भाग 5 , पृष्ठ 227 दारुल हिज्र बेरूत 1997 ई.) (दलायल النبوة للبيهقي,भाग 3, पृष्ठ 68 प्रकाशन दारुल अर्यान लिल् तुरास् क़ाहिरः 1988 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "आज वह ज़माना आया है कि लोग इस्लाम और ईमान के लिए क़ुर्बानी से बचने के लिए उज्र और बहाने तलाश करते हैं और वक़्त आने पर कहते हैं कि हमें यह दिक़्क़त है वह रोक है लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुव्वत-ए-क़ुदसिया के अधीन मुस्लमानों में क़ुर्बानी का वह जज़बा पैदा हो चुका था कि मर्द और बालिग़ औरतें तो अलग रहें बच्चे भी इसी जज़बा से सरशार नज़र आते थे यहां तक कि बदर की जंग के अवसर पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को बुलायाता कि उनमें से उन लोगों का इंतेख़ाब करें जो जंग के काबिल हूँ। इस वक़्त एक लड़के के मुताल्लिक़ आता है, दूसरे सहाबा और वह ख़ुद भी वर्णन करता है कि जिस वक़्त वे लोग खड़े हुए वे भी इस जोश में कि इस्लाम की ख़ातिर जान क़ुर्बान करने का अवसर मिले उनमें खड़ा हो गया परंतु चूँकि क़द छोटा था दूसरे लोगों के मुक़ाबला में छोटा मालूम होता था इस वजह से ख़तरा था कि शायद मुंतख़ब न हो सके। इसलिए वह अपने उंगलियों के बल खड़ा गया" पंजे के बल खड़ा हो गया "और एड़ीयां ऊपर उठा लें ता क़द ऊंचा मालूम हो और छाती तान लेता कमज़ोर न समझा जाए। रसूल-ए--करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि पंद्रह साल से कम उमर का कोई लड़का न लिया जाए और जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम चुनाव करते हुए उस के पास पहुंचे तो फ़रमाया कि यह बचा है उसे किस ने खड़ा कर दिया है उसे हटा दो। परंतु आज ऐसा होता तो शायद ऐसा बचा ख़ुशी से उछलने लगता कि मैं बच गया लेकिन जब इस बच्चा को अलग किया गया तो वह इतना रोया इतना रोया कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रहम आ गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अच्छा उसे ले जाए।"

(ख़ुत्बात-ए-महमूद, भाग 17, पृष्ठ 265)

इस सफ़र में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीने का जो अमीर निर्धारित किया था उस के बारे में लिखा है कि "मदीना से निकलते हुए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने पीछे अब्दुल्लाह बनाम मकतूम को मदीना का अमीर निर्धारित किया था परंतु जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम रूहा के क़रीब पहुंचे जो से 36 मील के फ़ासले पर है तो ग़ालिबन इस ख़्याल से कि अबदुल्लाह एक नाबीना आदमी हैं और लश्कर क़ुरैश की आमद आमद की ख़बर का तक़ाज़ा है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पीछे मदीना का इंतेज़ाम मज़बूत रहे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अबू लुबाबा बिन मंज़र को मदीना का अमीर निर्धारित कर के वापिस भिजवा दिया और अबदुल्लाह बनाम मकतूम के मुताल्लिक़ हुक्म दिया कि वह केवल नमाज़ के इमाम रहें परंतु इंतेज़ामी काम अबुलुबाबा सरअंजाम दें। मदीना की बालाई आबादी अर्थात क़बा के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आसिम बिन अदी को अलग अमीर फ़रमाया।"

(सीरत ख़ातिम नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो एम. ए, पृष्ठ 354)

इस्लामी लश्कर के झंडे के बारे में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस्लामी लश्कर का झंडा हज़रत मसअब बिन अमीर को अता फ़रमाया। यह सफ़ैद रंग का था। इसके इलावा दो सियाह-रंग के झंडे भी थे जिनमें से एक हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के पास था जिसका नाम उक़ाब था। यह झंडा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की ओढ़नी से बनाया गया था और दूसरा झंडा एक अंसारी सहाबी के पास था।

एक रिवायत के मुताबिक़ इस्लामी लश्कर के पास तीन झंडे थे।

मुहाजेरीन का झंडा हज़रत मुसब बिन अमीर रज़ियल्लाहु अन्हा के पास, क़बीला ख़ज़रज का झंडा हज़रत हुबाब बिन मंज़र रज़ियल्लाहु अन्हा के पास और क़बीला ओस का झंडा हज़रत साद बिन माज़ रज़ियल्लाहु अन्हो के पास था।

(अल्सीरतुल हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 203 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

हज़रत ख़ौवेत बिन जुबेर रज़ियल्लाहु अन्हु भी जंग में साथ थे लेकिन रस्ते में एक मुक़ाम पर पहुंच कर उनकी टांग पर एक पत्थर लगने की वजह से चोट आई और ख़ून बहना शुरू हो गया जिसकी वजह से वे चलने के काबिल न रहे इसलिए मदीना वापस चले गए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन के लिए भी माल--ए-ग़नीमत में हिस्सा रखा। कुछ उल्मा के नज़दीक वह जंग बदर में शामिल हुए थे।

(अल् हल्बिया, भाग 2, पृष्ठ 202 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.) लेकिन सही रिवायत यही है कि वापस चले गए।

मुशरिक की मदद लेने से इंकार के बारे में लिखा है कि मदीना में हबीब बिन यसाफ़ नामी एक निहायत ताक़तवर और बहादुर शख़्स था यह शख़्स क़बीला ख़ज़रज से ताल्लुक़ रखता था और ग़ज़व-ए-बदर के अवसर तक मुस्लमान नहीं हुआ था परंतु यह भी अपनी क़ौम ख़ज़रज के साथ जंग के लिए रवाना हुआ और जंग जीतने की सूरत में इसको माल-ए-ग़नीमत मिलने की भी उम्मीद थी। मुस्लमानों को इस से बहुत ख़ुशी हुई कि यह भी उनके साथ जंग में शरीक हो रहा है परंतु आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से फ़रमाया कि हमारे साथ केवल वही जंग में जाएगा जो हमारे दीन पर है। एक रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुम वापस जाओ हम मुशरिक की मदद नहीं लेना चाहते। हबीब बिन यूसुफ़ दूसरी मर्तबा फिर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया परंतु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरी मर्तबा भी उसे वापस भेज दिया। आख़िर तीसरी मर्तबा जब वह आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे फ़रमाया क्या तुम अल्लाह और इस के रसूले पर ईमान लाते हो? उसने हाँ! और इसके बाद वह मुस्लमान हो गया और निहायत बहादुरी के साथ जंग लड़ी।

(अल्सीरतुल अल्हलबिया, भाग 2 , पृष्ठ 204 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई.)

इस सफ़र के दौरान हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के हिरन के शिकार के बारे में भी वर्णन मिलता है। रास्ता में एक मुक़ाम पर पहुंच कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया। हे साद हिरन को देखो और उसे तीर मॉरो। रास्ते में उनको हिरन नज़र आया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए और अपनी ठोढ़ी मुबारक हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो के दोनों कंधों और दोनों कानों के दरमयान रखी और फ़रमाया तीर फेंको। हे अल्लाह इस का निशाना दरुस्त कर दे। फिर उन्होंने तीर मारा तो उनका निशाना हिरन से ख़ता न गया। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम मुस्कुराए और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो दौड़ते हुए गए और इस हिरन को पकड़ा तो इस में ज़िंदगी की रमक़ बाक़ी थी। इसलिए उसे ज़बह किया और उठा कर ले आए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म पर उसे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दरमयान तक़सीम कर दिया गया

(सबलुल् हुदा वल् रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 25, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 1993 ई.)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सफ़र जारी रखा। जब सुफ़रा मुक़ाम पर पहुंचे जो एक बहुत सरसब्ज़ और खजूर के दरख़्तों पर मुश्तमिल वादी है जो बदर के मैदान से एक मरहले के फ़ासले पर वाक़्य है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबूसुफ़ियान के मुताल्लिक़ मालूमात हासिल करने के लिए दो व्यक्ति को बदर की जानिब रवाना किया और ख़ुद भी लश्कर के हमराह आगे बढ़ते रहे यहां तक कि ज़फ़रान नामी वादी से गुज़रते हुए एक मुक़ाम पर पड़ाव डाला जो वादी सफ़ के क़रीब ही एक वादी का नाम है।

(अल्सीरतुल अल् नब्वी हिशाम, पृष्ठ 420 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (मोअज्जमुल बलदान, भाग 3, पृष्ठ 468, पृष्ठ 7 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

दोनों व्यक्ति जिन्हें रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबू सुफ़ियान के मुताल्लिक़ मालूमात हासिल करने के लिए भेजा था चलते चलते बदर में जा पहुंचे। वहां पानी के क़रीब एक टीले के पास ऊंट बिठाए फिर मशकीज़ा लेकर उनमें पानी भरने लगे। इन दोनों ने वहां दो लड़कियों की आवाज़ें सुनीं जो एक दूसरे को पकड़े हुए पानी की तरफ़ आ रही थीं। उनमें से एक दूसरी से कह रही थी। क़ाफ़िला कल या परसों आएगा मैं उनके पास मज़दूरी करके तेरा क़र्ज़ उतार दूँगी। इन लड़कियों के इलावा एक और आदमी भी वहां मौजूद था इस आदमी ने कहा तुम सच्च कह रही हो। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भेजे हुए आदमियों ने यह बातें सुन लीं और दोनों अपने ऊंटों पर सवार हो कर वापिस आए और रसूलुल्लाह सल्लल्ला-हो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर जो कुछ सुना था उसकी इत्तेला दे दी।

(उद्धृत अल्सीरतुल अल् नब्वी हिशाम, पृष्ठ 422 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

बताया कि इस तरह एक लश्कर आ रहा है। तो यह सूचना जब आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंच गई तो आप भी मज़ीद होशयार हो गए। बाक़ी तफ़सील इन शा अल्लाह आइन्दा बयान होगी।

इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ। एक हाज़िर जनाज़ा है जो श्रीमान शेख़ ग़ुलाम रहमानी साहिब यू.के का है। पिछले दिनों उनकी बानवे वर्ष की आयु में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। यह हज़रत-ए-शैख़ ग़ुलाम जीलानी साहिब आफ़ अमृतसर सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे थे और श्रीमान शेख़ रहमतुल्लाह साहिब जिनको लंबा अरसा कराची की जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। अर्से तक अमीर जमाअत कराची भी रहे। उनके दामाद थे। श्रीमान शेख़ ग़ुलाम रहमानी साहिब के पिता ने 1902 ई. में कादियान का सफ़र किया था और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़यारत हासिल की और यह कहते हुए फ़ौरी ईमान ले आए कि यह चेहरा किसी झूठे का नहीं हो सकता। ग़ुलाम रहमानी साहिब 1958 ई. में बर्तानिया आए। यहां आकर इलै-क्ट्रीकल इंजनियरिंग की डिग्री हासिल की। फिर लंबा अरसा यहां हस्पताल में एक मैडीकल रिसर्च कौंसल में काम किया। कई साल तक बतौर नैशनल जनरल सैक्रेटरी और दस साल से ज़ायद अरसा सदर जमात ऑल (Southall) के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। साउथ ऑल मिशन की लोकल कौंसल से मंज़ूरी के लिए बहुत कोशिश की और अल्लाह तआला ने उनकी कोशिशों को बारावर भी किया। जब एक घर में मिशन हाऊस क़ायम किया गया तो एक पड़ोसी ने मुक़ामी इंतेज़ामीया से शिकायत कर दी। इंतेज़ामीया ने सूरत-ए-हाल का जायज़ा लिया और इसको बंद करने का इरादा किया लेकिन रहमानी साहिब ने बड़ी कोशिश करके बड़ी मेहनत से अपना मौक़िफ़ इंतेज़ामिया के सामने पेश किया जिसके नतीजा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सफली मिली और जमात के हक़ में फ़ैसला हुआ। रहमानी साहिब ने साल-हा-साल तक साउथहाल मिशन हाऊस में इतवार की क्लासिज़ मुनाक़िद कीं और नई नसल के कई लोगों को इस्लाम अहमदियत की तालीम से करवाया। 1996 ई. में आप नैशनल सैक्रेटरी वसाया निर्धारित हुए और जब 2005 ई. में मैंने वसीयत के बारे में तहरीक की थी कि पच्चास फ़ीसद चंदा दहिंद ज़रूर मूसी हों तो उन्होंने बड़ी मेहनत से इस बारे में कोशिश की और तहरीक भी करते रहे और उन्हों ने शोबा वसाया को कंप्यूटराईज़ड भी किया और आर्गनाइज़ड किया

मरहूम सौम-ओ-सलात और तिलावत क़ुरआन-ए-करीम के पाबंद थे। ख़ुशगु-फ़तार, धीमे मिज़ाज के मालिक, कमगो, प्यार मुहब्बत से मिलने वाले एक नेक हमदर्द और मुख़लिस इन्सान थे। ख़िलाफ़त के साथ अक़ीदत का वालहाना ताल्लुक़ था। हज बैतुल्लाह की सआदत भी उनको मिली। मरहूम मूसी थे। पीछेरहने वालों में पत्नी जमीला रहमानी साहिबा के इलावा एक बेटे ख़ालिद रहमानी और बेटी आयशा हैं। आप डाक्टर नसीम रहमतुल्लाह साहिब जो अल-इस्लाम वेबसाइट के चेयरमैन हैं उनके बहनोई हैं।

लईक ताहिर साहिब मुरब्बी सिलसिला लिखते हैं। हर माह मस्जिद फ़ज़ल में आते थे और चंदे की बड़ी रक़म अदा कर के रसीद ले जाते थे। इस ज़माने में मुझे उनके साथ इतना ही परिचय था लेकिन उनकी तबीयत पर उनकी नेकी का असर था। तफ़सीली परिचय 1990 ई. में हुआ जब उनकी बतौर मुरब्बी यहां साउथ ऑल में तक़र्रुरी हुई। कहते हैं उन दिनों ये साउथहाल के सदर जमात थे। मिशन हाऊस की निगहदाशत अपने घर की तरह करते थे। बेशतर वक़्त मिशन हाऊस में रहते। उसकी सफ़ाई सुथराई का काम भी करते। मिशन हाऊस की तौसीअ भी उन्ही के वक़्त में हुई। बहुत बाअदब थे। हर एक छोटे बड़े से मुहब्बत और प्यार और बुज़ुर्गाना मुर-व्वत से पेश आते थे। सिलसिले के पैसे की हिफ़ाज़त करते और इंतेहाई बेनफ़्स इन्सान थे। उनकी जो ख़ूबियां वर्णन हुई हैं उनमें एक ख़ूबी मैं ने भी देखी है। इंतेहाई आजिज़ी थी और ख़िलाफ़त से वफ़ा का बड़े इंतेहा का ताल्लुक़ था। इस में बहुत बढ़े हुए थे। बहुत कम लोग ऐसे होते हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद फ़रमाए और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की और अपनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा ग़ायब है। रहमानी साहिब का यह जनाज़ा तो हाज़िर है जुमे के बाद इं शा अल्लाह अदा होगा उसके साथ कुछ ग़ायब जनाज़े हैं। ग़ायब जनाज़ों में पहला जनाज़ा ताहिर आग मुहम्मद साहिब का है। यह महदी आबाद, डोरी, बुर्कीना फासो के हैं। उनकी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। 44 वर्ष उनकी उम्र थी। इन्ना लिल्लाहे व

इन्ना ईलेही राजेऊन। मिशनरी इंचार्ज साहिब लिखते हैं कि उनके पिता ने 1999 ई. में बैअत की सआदत पाई थी लेकिन उन्होंने बैअत नहीं की थी। फिर उन्नीस साल की उम्र में पांव में तकलीफ़ हुई और वागह डोगो ईलाज के लिए गए। अपनी बीमारी में बहुत दुआ की कि अल्लाह तआला मुझे सीधा रास्ता दिखा। अगर अहमदियत सच्ची है तो मेरी राहनुमाई कर। नौजवानी में उनको यह शौक़ था कि दीन के बारे में जानें और अल्लाह तआला से दुआ भी मांगी। दौरान-ए-ईलाज मुख़्तलिफ़ ख़ाबों की बिना पर उनको तसल्ली हो गई और वापस आकर बैअत करली। फिर उन्होंने जमात के सिलाई सैंटर से ही सिलाई का काम सीख लिया और इसी को अपनी गुज़र बसर का ज़रीया भी बनाया। इस ईद पर ईदुल फ़ित्र में शुहदा की जो फ़ैमिलीज़ थीं, बुर्कीना फासो के जो शुहदा थे। उनके कपड़े सिलवाने थे कोई दर्ज़ी काम लेने को तैयार नहीं था। जब वहां मुरब्बी साहिब (राना साहिब) ने उनसे पूछा तो उन्होंने हामी भर ली। मियां बीवी ने दिन रात काम करके सत्तर अफ़राद के कपड़े ईद से पहले सी कर भिजवा दिए। मुहम्मद साहिब को तब्लीग़ का भी बड़ा शौक़ था और बड़ी सुलझी हुई गुफ़्तगु करते थे। अगरचे पढ़े लिखे कम थे या नहीं थे लेकिन फ़्रैंच बहुत अच्छी बोलते थे।

उनकी टांग कैंसर की वजह से घुटने के ऊपर से काट दी गई थी। कुछ दिन पहले अचानक तकलीफ़ का दुबारा हमला हुआ जहां से टांग काटी गई थी वह सूजी लेकिन मुल्क के हालात क्योंकि ख़राब हैं, सब रास्ते बंद हैं। वागह डोगो में जहां बड़ा हस्पताल था जा नहीं सकते थे। तो वहीं मुक़ामी हस्पताल में ही चंद दिन रहे और फिर वहीं उनकी वफ़ात हो गई।

जब से अहमदी हुए थे उन्हें तब्लीग़ का बहुत शौक़ था। हमेशा कोई तरीक़ा निकाल लेते थे। स्मार्टफोन ख़रीदा तो अपने इमाम अल्हाज इबराहीम बदगा साहिब से कहा कि इस में तब्लीग़ रिकार्ड करके लोगों को पैग़ाम भेजा करें और इस तरह तब्लीग़ करते थे। ख़र्च भी इस का ख़ुद बर्दाश्त करते थे। पीछे रहने वालों में उनकी दो बीवियां हैं और पाँच बेटे बेटियां हैं। अल्लाह तआला उन लोगों को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए और उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे। मरहूम के दर्जात बुलंद करे।

अगला जनाज़ा, वर्णन ख़्वाजा दाऊद अहमद साहिब का है। यह 25 मई को अस्सी वर्ष की उम्र में फ़ौत हुए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके एक बेटे ख़्वाजा फ़हद अहमद कैरी बॉस में मुरब्बी सिलसिला हैं। कहते हैं कि हमारे ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ मेरे दादा ख़्वाजा अबदूल्लतीफ़ साहिब वलद ख़्वाजा अहमद दीन साहिब के ज़रीये हुआ। दादा-जान की परवरिश उनके नाना ख़्वाजा ग़ुलाम मुहम्मद साहिब के घर में हुई जो अल्लाह के फ़ज़ल से अहमदी थे। कहते हैं मेरे दादा-जान ने उनकी ज़ेर परवरिश 1917 ई. में तक़रीबन ग्यारह साल की उम्र में सिलसिला की बैअत की और यूं अपने सब बहन भाईयों में वाहिद अहमदी थे। कैनेडा में तवील अरसा उनको जमाती ख़िदमत की भी तौफ़ीक़ मिली। पहले पाकिस्तान में जमात इस्लामाबाद में उनको काफ़ी अरसा ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिलती रही। 1974 ई. में बतौर क़ायद मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया इस्लामाबाद हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के पाकिस्तान क़ौमी असैंबली में आमद के अवसर पर भी उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इस हवाले से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह ने उनके बारे में इज़हार-ए-ख़ुशनुदी भी फ़रमाया। पेशे के एतबार से यह सिवल इंजनीयर थे। ख़िलाफ़त से वालहाना मुहब्बत और अक़ीदत रखते थे। जमाती ख़िदमात की ब-तरीक़ अहसन अंजाम दही के लिए हर वक़त कोशां रहते थे। बवक़्त-ए-वफ़ात मुक़ामी सैंटर में थे। जमात की मज्लिस-ए-आमला की मीटिंग में थे। घर के लिए रवाना होने से थोड़ी देर पहले सीने में कुछ तकलीफ़ के आसार ज़ाहिर हुए और चंद मिनटों में अपने मौला के हुज़ूर हाज़िर हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी थे। पीछेरहने वालों में पत्नी के इलावा चार बेटे और एक बेटी शामिल हैं। जैसा कि मैंने कहा एक बेटे वाक़िफ़ ज़िंदगी हैं। कैरी बॉस में मुरब्बी हैं, मुबल्लिग हैं और वहां जलसे की मसरुफ़ियात और जमाती मसरुफ़ियात की वजह से कैनेडा नहीं आ सके। अपने पिता के जनाज़े में शरीक नहीं हो सके थे। अल्लाह तआला उनको भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। मरहूम के दर्जात बुलंद करे।

अगला वर्णन है श्रीमान सय्यद तनवीर शाह साहिब। यह भी कैनेडा के, ससकॉटून के हैं। उनकी पिछले दिनों पैरागोय में वफ़ात हुई। वहां यह वक़्फ़-ए-आरिज़ी के लिए गए हुए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके भी एक ही बेटे हैं सय्यद रज़ा शाह और वह मुरब्बी सिलसिला हैं। तनवीर शाह साहिब की माता फ़र्ख़ ख़ानम साहिबा तुर्किस्तान से अपने भाई हाजी जुनूद अल्लाह और अपनी माता के साथ कादियान बैअत के लिए आई थीं। उनके बेटे लिखते हैं कि मेरे दादा सय्यद बशीर शाह साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम के सहाबी हज़रत-ए-सय्यद अब्दुलसत्तार शाह साहिब के नवासे थे। इस तरह उनकी हज़रत एम ताहिर से भी रिश्तेदारी थी। मरहूम जमात के बहुत वफ़ादार मैंबर थे। तनवीर शाह साहिब हमेशा जमात की ख़िदमत के लिए तैयार रहते थे। उनके बेटे लिखते हैं कि जमात के प्रोग्रामों में हमें ज़रूर ले के जाते थे और हर जुमे को बाक़ायदा स्कूल से छुट्टी करवा के जुमे पर ले के जाया करते थे। माली क़ुर्बानियों को बहुत एहमियत देते थे। हमेशा तनख़्वाह से एक हिस्सा उसके लिए निकालते और घर वालों और जमात को भी ऐसा करने के लिए कहते रहते थे। तब्लीग़ का बड़ा शौक़ था। अक्सर बताया करते थे कि किस तरह हम जमाअत में अच्छी तब्लीग़ कर सकते हैं। पैरा गोय में भी ख़ुशी से बताया कि उनकी मौजूदगी में दो बैअतें हुई थीं। क़नाअत भी उनमें बहुत थी। कभी दौलत नहीं चाही और न उस की हसरत थी बल्कि जो अल्लाह ने उन्हें दिया हमेशा इस पर शुक्रगुज़ार रहते थे। उन्हें अल्लाह तआला पर यक़ीन और तवक्कुल था कि जो भी ज़रूरत है अल्लाह पूरी कर देगा और जब कोई मुश्किल आती तो कहते कि दुआ करो, अल्लाह सँभाल लेगा और अल्लाह तआला सँभाल भी लिया करता था। उनके बेटे कहते हैं मुझे बार-बार कहते थे कि बतौर मुरब्बी अपनी ज़िम्मेदारी समझो और इख़लास से काम किया करो। उनकी पत्नी कहती हैं कि उनतालिस साल का हमारा साथ था और मैंने उनमें कोई कमी नहीं देखी। ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के साथ बहुत प्यार और वफ़ा का ताल्लुक़ था और बच्चों को भी इस की तलक़ीन किया करते थे। सीधे मार्ग पर ख़ुद भी चलते और बच्चों को भी चलाते। कहती हैं हमारी ज़िंदगी के दौरान कभी भी किसी के बारे में बुरा बयान नहीं किया। और फिर ससुराली रिश्तों का भी ख़्याल रखते थे। कहती हैं कि मेरी माता को जब भी मेरी ज़रूरत हुई मुझे ख़ुशी से उनके पास भेज दिया। पैरागोय के मुरब्बी अब्दुला लिनोर बातिन साहिब कहते हैं कि कैनेडा में मुख़्तलिफ़ ओहदों पर उन्हें ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिलती रही लेकिन उनमें फ़ख़र और बरतरी ज़ाहिर करने का कोई अंसर नहीं था। उनमें जमात की ख़िदमत का बहुत शौक़ था। जहां भी जाते भरपूर अंदाज़ में हमेशा एक फ़र्ज़ समझ कर निहायत मुहब्बत के साथ काम सरअंजाम देते। कहते हैं उनकी शख़्सियत का पैरागोय जमात के नौजवानों पर गहिरा असर था। उन्हें सब्र, मेहरबानी और मेहमान-नवाज़ी सिखाई।

सदर जमात रजायना हबीबुर्रहमान साहिब कहते हैं कि जमात के बहुत मुख़लिस ख़ादिम थे चेहरे पर हर वक़त मुस्कुराहट सजी रहती थी। मैंने उन्हें कभी ग़ुस्से में नहीं देखा। बहुत हलीम और प्यार से कारकुनों से काम लेते थे। ख़िदमत की वजह से थकन का एहसास कभी नहीं देखा। ऐसा लगता था कि उन पर हमेशा अपने रब की रज़ा हासिल करने की धुन सवार रहती थी। ख़िलाफ़त से निहायत दर्जे का इशक़ था। पैरागोय के एक नौ मुबाईन इलयास ओलेवीरा साहिब हैं, कहते हैं कि मेरा उनसे परिचय तो मुख़्तसर वक़्त का कुछ अर्से से था लेकिन इस मुख़्तसर वक़्त में उन्होंने मेरे लिए और मेरे दोस्तों के लिए, उन लोगों के लिए जो राह-ए-इस्लाम में नए हैं एक अज़ीम विरसा छोड़ा। उनसे हमने सब्र सीखा। हमने हर वक़त मददगार, मेहरबान और अच्छा बनना सीखा। कहते हैं उन्होंने हमें सिखाया कि किसी को कुछ सिखाने के लिए बोलना ज़रूरी नहीं है बल्कि अमली ख़िदमत करो तो इसी से लोग सीख भी जाते हैं और तब्लीग़ भी हो जाती है। अल्लाह तआला मरहूम के साथ मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनके बच्चों को सब्र और हौसला दे। उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ दे।

एक वर्णन है अब राना मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब का जो मुरब्बी सिलसिला थे। उनकी भी पिछले दिनों वफ़ात हुई है। यह राना अताउल्लाह ख़ान साहब के बेटे थे। अप्रैल के आख़िर में उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा राना अताउल्लाह दीन साहिब के ज़रीये से हुआ जिन्हों ने 1931 ई. में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत की थी। बैअत के बाद आपकी शदीद मुख़ालेफ़त हुई और इस मुख़ालेफ़त की वजह से कुछ दूसरे रिश्तेदार मुर्तद हो गए लेकिन आप अहमदियत पर साबित-क़दम रहे और तब्लीग़-ए-दीन करते रहे। राना ज़फ़रुल्लाह ने 1987 ई. में जामिआ पास

पृष्ठ 2 का शेष

किया। इस के बाद मुसलसल छत्तीस साल तक उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। उनका ख़िदमत का ज़्यादा-तर वक़्त मैदान-ए-अमल में मुख़्तलेफ़ इलाक़ों में बतौर मुरब्बी के ही मिला।

सय्यद नेअमतुल्लाह साहिब अफ़ग़ानी हैं, जो आजकल घाना में मुबल्लिग हैं कहते हैं कि अच्चीनी पायान पेशावर में जहां हम अफ़ग़ानिस्तान से हिज्रत करके आए थे वहां यह मुरब्बी साहिब रह रहे थे। 1999 ई. और 2000 ई. की बात है निहायत सादा-मिज़ाज और ख़ाकसार और दरवेश इन्सान थे। बहुत मेहनती और मुहब्बत करने वाले और मुख़लिस थे। अफ़ग़ानिस्तान की जमाअत पर मुरब्बी साहिब का बहुत बड़ा एहसान है। कहते हैं हम तीन अफ़ग़ान मुरब्बियान को अल्लाह तआला ने उन्ही की वजह से मुरब्बी बना दिया

ग़रीबों के बहुत हमदरद थे। छुप कर ग़रीबों की मदद किया करते थे। उनकी पत्नी बताती हैं कि वफ़ात की ख़बर सुन कर बहुत से ऐसे लोग मर्द और ख़वातीन ताज़ियत के लिए घर आए जिन्हें हम में से कोई नहीं जानता था। वह इस वजह से भी परेशान थे कि मुरब्बी साहिब ने हमारा ख़र्च निर्धारित किया हुआ था और अपने रिश्तेदारों और मुख़य्यर हज़रात से ले के इन ग़रीबों की मदद किया करते थे, आपकी वफ़ात के बाद हमारा क्या होगा। उनके दामाद मुरब्बी सिलसिला हैं। कहते हैं कि मैंने राना मुहम्मद ज़फ़रुल्लाह ख़ान साहब जैसे लोग बहुत कम देखे हैं जो बेनफ़्स होते हैं। कहते हैं मैंने किसी भी किस्म का घमंड और तकब्बुर उनमें नहीं देखी। माफ़ करने में पहल करने वाले थे ख़ाह दूसरा ग़लत होता फिर भी माफ़ी में पहल करते थे। बहुत प्यार करने वाले, हर वक़त दूसरों के काम आने वाले थे। पीछे रहने वालों में माता और पत्नी के इलावा तीन बेटियां शामिल हैं। अल्लाह तआला मरहूम के दर्जात बुलंद करे। मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफीक दे।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

संस्थान

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

मुंसलिक होती हैं। अतः उनका एक ही क़ानून से वाबस्ता होना ज़ाहिर करता है कि दुनिया में कोई दूसरा क़ानून नहीं अन्यथा ज़रूर ख़लल होता और जब दूसरा क़ानून ही नहीं तो दूसरे मुक़न्निन का वजूद किस तरह होगा?

दुनिया की सब चीज़ें अकेले अकेले भी तस्बीह करती हैं, इस तरह कि हर चीज़ में ख़ुदा की सिफ़ात की झलक है, ख़ुदा की सत्तारी, ग़फ़्फ़ारी, उसकी ख़लक़, उसकी मल्क, इत्यादि समस्त सिफ़ात हर एक चीज़ में पाई जाती हैं। अर्थात वह चीज़ इन बातों पर अमल करती हुई नज़र आती है । दुनिया का कोई कण भी ले लो उस में ये सब सिफ़ात काम करती नज़र आयेंगी । अतः जब हर चीज़ ख़ुदाए वाहिद की सिफ़ात को ज़ाहिर कर रही है तो उसे किसी और ख़ुदा की तरफ़ किस तरह मंसूब किया जा सकता है।

وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ कुछ लोगों ने यह मुराद ली है कि उनकी अलैहदा अलैहदा बोलियाँ हैं जो समझ में नहीं आतीं। अगर हर चीज़ की अलैहदा बोली होती और हम उसे समझ नहीं सकते तो हमारे लिए यह अमर दलील कैसे बन सकता। दलील तो वह होती है जिसे हम समझ भी सकें। अतः यहां पर تَفْقَهُوْنَ से मुख़्तलिफ़ वस्तुओ की बोली समझना मुराद नहीं बल्कि यह बताया है कि तुम यह नहीं समझते कि वह तस्बीह कर रही हैं। اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا वह हलीम और ग़फ़ूर है। इस में इस तरफ़ इशारा किया है कि इस के इलम की वजह से तुम बजाय फ़ायदा उठाने के शरारतों में बढ़ रहे हो क्या तुम ख़्याल नहीं करते कि ऐसे निज़ाम और दलायल के होते हुए तुम्हारा उनसे फ़ायदा उठाना बल्कि शरारतों में बढ़ते जाना और फ़ौरन न पकड़े जाना ख़ुदा तआला के इलम की वजह से ही है। अतः शराफ़त का जज़बा ज़ाहिर करो और अल्लाह तआला के इस इलम की क़दर करो

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 343 प्रकाशन 2010 कादियान)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोई के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा

सितंबर, अक्तूबर 2022 ई. (भाग-10)

क़ायम-ए-अमन के हवाला से जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा का शुमार प्रथम स्थान के मार्गदर्शकों में होता है। आप अपने ख़ुत्बात, तक़ारीर, कुतुब और अपनी ज़ाती मुलाक़ातों के ज़रीया अमन को फ़रोग़ देते हैं और नियमित इन्सानियत की ख़िदमत और इन्सानी हुक़ूक़, अमन और मुआशरे में इन्साफ़ की तालीम देते हैं। जबकि जमाअत अहमदिया को बार-बार मुश्किलात, इमतेयाज़ी सुलूक और ज़ुल्मोसितम और तशद्दुद का सामना करना पड़ा है। 28 मई 2010 ई. को अट्ठासी अहमदी मुस्लमानों को पाकिस्तान की दो मसाजिद में दर्द-नाक तरीक़े से दहश्तगरदों ने क़तल किया और असंख्य अहमदी मुस्लमानों को टार्गेट करके क़तल किया गया। इस ज़ुल्मो-सितम की जारी दास्तान के बावजूद हुज़ूर ने दूसरों से इंतेक़ामी तशद्दुद करने से मना फ़रमाया जो कि एक बहुत ही अज़ीम अमल है।

हुज़ूर ने मज़हबी आज़ादी पर-ज़ोर दिया जो इस्लामी तालीम पर आधारित है और अमरीका के क़वानीन में भी शामिल है। आपने इस दौरा में ज़ायन में पहली मस्जिद का उद्घाटन किया और यहां Allen में भी इस मस्जिद का उद्घाटन कर रहे हैं। हुज़ूर ने अपने दुनिया-भर के दौरों में इन्सानियत की ख़िदमत के जज़बा को फ़रोग़ दिया है और इस विषय में विभिन्न देशों के सदरान, वज़ीर-ए-आज़म, पार्लीमैंट के मेम्बरान और मज़हबी राहनुमाओं से मिले हैं। आपने बार-बार दुनिया के राहनुमाओं को समझाया कि हक़ीक़ी और देर-पा अमन के लिए इन्साफ़ कायम करना होगा।

हुज़ूर ने दुनिया की बहुत सी मज़लूम क़ौमों के हुक़ूक़ के लिए आवाज़ उठाई। 2008 ई., 2012, 2013 ई. और 2018 ई. में अमरीका तशरीफ़ लाए। आपने 27 जून 2012 ई. को यू. एस कैपिटल की Ravern House Building में दोनों पार्टीयों की तरफ़ से आयोजिता एक इस्तक़बालिया में ख़िताब फ़रमाया जिसमें अमन के रास्ते और बैनुल अक़वामी मुंसिफ़ाना ताल्लुक़ात पर बात की

हमारी ख़ाहिश है आप दुबारा हमारे दारुल हकूमत में आकर ख़िताब फ़रमाएं। आपने 2020 ई. में यू.के की एक Ministerial Conference में ख़िताब फ़रमाया जिसका शीर्षिक "आज़ाद ए मज़हब" था। आपने 2022 ई. में वाशिंगटन में होने वाले आलमी मज़हबी SUMMIT के लिए भी एक ख़ुसूसी पैग़ाम भेजा।

हम आपकी इन्फ़िरादी और बैनुल अक़वामी अमन के क़ियाम के लिए अनथक कोशिशों को सराहते हैं और आपकी शिद्दत पसंदी और दहश्तगर्दी की पुर ज़ोर मुज़म्मत करने पर सलाम पेश करते हैं और आख़िर में हम आपकी इन काविशों को सराहते हैं जिनमें आपने जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की राहनुमाई फ़रमाई कि समस्त ज़ुलम-ओ-जबर के बावजूद इंतेक़ाम नहीं लेना। हुज़ूर आपका शुक्रिया।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 6 बजकर 43 मिनट पर हाज़िरीन से अंग्रेज़ी ज़बान में ख़िताब फ़रमाया :

ख़िताब सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम" के साथ अपने ख़िताब का आग़ाज़ फ़रमाया और मेहमानों को "अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहू" कहा

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैं सबसे पहले इस अवसर पर समस्त मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा जिन्होंने हमारी दावत क़बूल की और आज हमारे साथ शामिल हुए। यह हमारी नई मस्जिद, जहां मुस्लमान अल्लाह तआला की इबादत करेंगे, के उद्घाटन के अवसर पर इस्तक़बालिया की तक़रीब है। यह एक ख़ालिस्तन मज़हबी तक़रीब है, जिसकी मेज़बानी एक इस्लामी कम्यूनिटी कर रही है। यह देखते हुए कि आप में से ज़्यादा-तर मुस्लमान नहीं हैं या जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के मैंबर्ज़ नहीं हैं, आपकी इस तक़रीब में शमूलियत आपकी कुशादा दिली, मेहरबानी और बुर्दबारी की चित्रांकन करती है और इस वजह से मैं आपके काबिल-ए-तारीफ़ हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया तारीफ़ के ये शब्द महिज़ मुहज़्ज़ब दिखने का प्रयास नहीं बल्कि यह दिल से निकले हुए शब्द हैं और वास्तव में जमाअत में मेरा फ़र्ज़ है कि मैं आप सब का तह-ए-दिल से शुक्रिया अदा करूँ क्योंकि पैग़ंबर इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वाला वसल्लम ने फ़रमाया : "जो व्यक्ति दूसरों का शुक्रगुज़ार नहीं वह अल्लाह तआला का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता"। बहैसीयत मुस्लमान, हमारा विश्वास है कि अल्लाह तआला ने हमें इस मस्जिद को बनाने की तौफ़ीक़ और वसायल अता फ़रमाए हैं। इसलिए हमें अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिए और वास्तव में जमाअत में अल्लाह का शुक्र अदा करना उसी वक़्त संभव है जब हम उस की मख़लूक़ के भी शुक्रगुज़ार और कदर-दान हों। इस लिए बहैसियत एक मुस्लमान आप लोगों का शुक्रिया अदा करना और आपकी इज़्ज़त-अफ़ज़ाई करना मेरा एक मज़हबी फ़रीज़ा भी है। इसी तरह मैं उन समस्त लोगों का भी तह-ए-दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ जिन्हों ने किसी भी तरह इस प्रोजेक्ट में सहायता की।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारी जमाअत की तरफ़ से तामीर-कर्दा समस्त मसाजिद के बुनियादी उद्देश्यों हमेशा एक जैसे होते हैं। सबसे पहले तो हमारी मसाजिद हमारे अहबाब के लिए एक जगह जमा हो कर अल्लाह तआला की इबादत का फ़रीज़ा अदा करने का अवसर फ़राहम करती हैं। दूसरा हमारी मसाजिद हमें ख़ुदा की मख़लूक़ की ख़िदमत करने और इस्लामी तालीमात की तब्लीग़ करने की तौफ़ीक़ देती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह इंतेहाई दुख और अफ़सोस का बायस है कि बहुत से लोग इस्लाम को एक इंतेहापसंद और तंगनज़र मज़हब समझते हैं। संभव है कि इस शहर के भी कुछ मुक़ामी लोग इस मस्जिद के बनने से ख़ायफ़ हों या ख़दशात रखते हों। जैसा कि कुछ दीगर मुक़ामात पर जहां हमने मसाजिद तामीर की हैं वहां के कुछ मुक़ामी लोगों ने अपने ख़दशात या तहफ़्फ़ुज़ात का इज़हार किया कि नई मसाजिद और मुस्लमानों की संख्या में इज़ाफ़ा उनके क़स्बे या शहर के अमन-ओ-सलामती को शायद नुक़्सान पहुंचाए। अगर किसी को इस किस्म के ख़दशात लाहक़ हों तो मैं उन्हें विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि एक मुख़लिस मुस्लमान जो इस्लाम की तालीमात को समझता है और उनकी क़दर करता है, वह कभी भी ऐसा काम नहीं कर सकता जिससे इस्लाम का ग़लत तसव्वुर पेश हो या बदनामी का बायस हो और न कभी वह ग़ैरमुस्लिमों के लिए तकलीफ़ या परेशानी का सबब बन सकता है। अतः में स्पष्ट तौर पर कहता हूँ कि ये मस्जिद आप के लिए या दूसरे शहरियों के लिए कभी भी किसी किस्म की तकलीफ़ या परेशानी का बायस नहीं बनेगी। यह मस्जिद मुआशरे में इंतेशार के बीज बोने के बजाय मुआशरे की बेहतरी के लिए मक़नातीसी क़ुव्वत का काम करेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस मस्जिद की असल ग़रज़ और उद्देश्य प्रत्येक किस्म के मज़हब और अक़ीदा के लोगों के दरमयान मुहब्बत और एहतेराम को फ़रोग़ देना और दायमी अमन का ज़रीया बनना है और इन शा अल्लाह आइन्दा भी हमेशा यही उद्देश्यों रहेंगे। हमारा यह अज़म केवल उसी जगह के लिए नहीं बल्कि दुनिया के किसी भी हिस्से में जहां भी और जब भी हम मस्जिद बनाएंगे, हमारा यही अज़म होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मक्का में अल्लाह का मुक़द्दस घर ख़ाना काअबा समस्त मुस्लमानों के लिए सबसे अधिक काबिल-ए-एहतेराम और मुअज़्ज़िज़ इबादत-गाह है। वास्तव में जमाअत मे दुनिया-

भर के समस्त मुस्लमान इबादात बजा लाने और नमाज़ अदा करने के लिए काअबा की तरफ़ ही अपना रुख करते हैं। ख़ाना काअबा की बुनियाद अल्लाह तआला के हुक्म के अनुसार रखी गई ताकि ज़िंदगी के समस्त शोबों और अक़्वाम तक अमन और सलामती का विश्वव्यापी पैग़ाम पहुंचाया जा सके। मस्जिदें जो काअबा का रुख़ बनाई गईं, यह केवल ज़ाहिरी तौर पर काअबा की सम्त की पैरवी करने के लिए नहीं बनाई गईं बल्कि प्रत्येक मस्जिद और इस के अंदर इबादत करने वाले प्रत्येक व्यक्ति का फ़र्ज़ है कि वह ख़ाना काअबा के अग़राज़-ओ-उद्देश्यों को पूरा करे और पूरी दियानतदारी से उनका अमली उदाहरण पेश करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया ख़ाना काअबा और इस के साथ प्रत्येक मस्जिद का एक बुनियादी उद्देश्य यह भी है कि वह अल्लाह की इबादत के साथ साथ उन लोगों का भी घर बन जाएं जो खुले दिल के मालिक, रहम-दिल और मेहरबान हैं और अपने क़ौल-ओ-फ़ेअल के ज़रीये समस्त बनीनौ इन्सान के लिए अमन, सुलह और ख़ैर सगाली का पैग़ाम देने वाले हैं। अल्लाह तआला क़ुरान-ए-पाक, जो उम्मत मुस्लिमा की मुक़द्दस तरीन किताब है, की सूरत आल-ए-इमरान आयत 98 में ख़ाना काअबा के बारे में फ़रमाता है कि "और जो इस में दाख़िल हो, वह अमन में आजाता है'। इसका यह मतलब नहीं है कि महिज़ ख़ाना काअबा की ज़यारत करना, या उसके क़ुरब-ओ-जवार में नमाज़ अदा करना इन्सान को अमन और ख़ुशहाल ज़िंदगी की ज़मानत देगा। वास्तव में यह आयत बताती है कि सच्चा मुस्लमान वही है जो ख़ाना काअबा के असल उद्देश्य को पूरा करने की प्रयास करता है और हर वक़त इस्लामी तालीमात पर अमल करने की प्रयास करता है। दरअसल ये शब्द "और जो इस में दाख़िल हो, वह अमन में आजाता है" अल्लाह तआला के हक़ीक़ी बंदों से मुतालिबा करते हैं कि वह हुक़ूकुल ईबाद की अदायगी की तरफ़ और समस्त बनीनौ इन्सान के लिए अमन-ओ-सलामती फ़राहम करने की तरफ़ बहुत अधिक तवज्जा दें। इस तरह वह न केवल ख़ुद अमन पाएँगे बल्कि दूसरों के अमन के भी ज़ामिन बन जाऐंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इंतेहाई अफ़सोस की बात है कि विरोध करने वाले इस्लाम की तरफ़ से इल्ज़ाम लगाया जाता है कि इस्लाम एक इंतेहापसंद मज़हब है जो तशद्दुद और जंग-ओ-जदल को बढ़ावा देता है। सच्च तो यह है कि इस्लामी तालीमात मुस्लमानों को जंग में शामिल होने या ताक़त के प्रयोग की इजाज़त नहीं देतीं, सिवाए उन इंतेहाई सख़्त हालात के जहां उनके ख़िलाफ़ नाहक़ जंग छेड़ दी जाए और खुले आम इस्लाम को तबाह-ओ-बर्बाद करने का प्रयास किया जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम के आरंभ में सूरत-ए-हाल इस क़दर संगीन थी कि अल्लाह तआला ने मुस्लमानों को अपना दिफ़ा और विश्वव्यापी मज़हबी आज़ादी के उसूलों को क़ायम करने और उनकी हिफ़ाज़त करने के लिए जंग की इजाज़त दी। ऐसे हालात में भी इस्लाम ने जंग के सख़्त उसूल-ओ-ज़वाबत वज़ा किए जिनके अनुसार ज़ुलम का जवाब भी इसी तनासुब से हो जिस क़दर ज़ुलम हुआ है और क्याम-ए-अमन का मामूली से मामूली अवसर भी हाथ से न जाने दिया जाए। इस्लाम के अनुसार दिफ़ाई जंग का उद्देश्य कोई इंतेक़ाम या बदला लेना नहीं बल्कि उसका वाहिद उद्देश्य ज़ुलम, बरबरियत और नाइंसाफ़ का ख़ातमा है। अल्लाह का हुक्म है कि जूं ही ज़ुलम-ओ-सितम बंद हो तो जो भी जंगी इक़दामात किए गए हों, इन्हें फ़ौरी रोक दिया जाए और अदल-ओ-इन्साफ़ से काम लिया जाए। अतः जब इबतेदाई मुस्लमानों को, जो नियमित ज़ुलम-ओ-सितम का शिकार थे, अपने दिफ़ा की इजाज़त दी गई, वह केवल और केवल मज़हबी आज़ादी के सुनहरी उसूल को क़ायम करने के लिए थी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ुरआन-ए-मजीद की में अल्लाह तआला ख़ाना काअबा के बारे में फ़रमाता है कि हमने इस मुक़द्दस घर को बुराई से बचने के लिए बतौर पनाह-गाह और बनीनौ इन्सान को मुत्तहिद करने के लिए बतौर अमन-ओ-सलामती का मस्कन बनाया है। यह आयत मुस्लमानों को समाज में अमन और हम-आहंगी के साथ रहने और दूसरों को अमन-ओ-सलामती फ़राहम करने के फ़रीज़ा पर-ज़ोर है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अतः अगर कोई व्यक्ति दूसरों को अमन पहुंचाने का माध्यम बनने में नाकाम रहता है, तो वह अपने आपको सच्चा मुस्लमान नहीं कह सकता। क़ुरान-ए-पाक क़ायम-ए-अमन के हवाला से में मुस्लमानों की इस बारे में भी राहनुमाई करता है कि अगर मंदबुद्धि विरोध करने वाले उनके साथ उपहास करें या बदतमीज़ी से पेश आएं तो उन्हें शदीद रद्द-ए-अमल दिखाने के बजाय किस किस्म का जवाब दिया जाए। इसलिए अल्लाह तआला मुस्लमानों को हिदायत फ़रमाता है कि वह इश्तेआल अंगेज़ी के वक़्त अपना वक़ार क़ायम रखें, सब्र से काम लें, और "तुम पर सलामती हो" कह कर जवाब दें और वहां से चले जाएं। क़ुरआन-ए-करीम तालीम देता है कि मुस्लमान जारियत और इश्तेआल अंगेज़ी का मुक़ाबला करने के बजाय अपनी अना को एक तरफ़ रख कर अमन का पैग़ाम दें और प्रत्येक किस्म के लड़ाई झगड़े से इजतेनाब करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मज़ीद अल्लाह तआला क़ुरान-ए-पाक का आग़ाज़ इसी ऐलान से करता है कि वह प्रत्येक रंग-ओ-नसल और प्रत्येक मज़हब के मानने वालों का रब है। अल्लाह तआला ने स्पष्ट कर दिया है कि वह किसी विशेष मज़हब या दौर के लोगों साथी नहीं बल्कि वह प्रत्येक क़ौम, प्रत्येक मज़हब के पैरोकार और प्रत्येक ज़माने के लोगों के लिए ख़ालिक़ है और सब की परवरिश करने वाला है। ये शब्द बेमिसाल ख़ूबसूरती और हिक्मत के हामिल हैं जो आलमी इन्सानी मुसावात के उसूलों को एक नाक़ाबिल-ए-रद्द हक़ क़रार देते हैं और ये स्पष्ट करते हैं कि अल्लाह के इनामात और एहसानात किसी विशेष रंग-ओ-नसल तक सीमित नहीं, बल्कि ये नेअमतें बिना इमतेयाज़ प्रत्येक पर नाज़िल की हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह, जो मुस्लमानों का माबूद है, जब समस्त इन्सान चाहे वे ईसाई हों, यहूदी हों, हिंदू हों, सिख हों या कोई दूसरा मज़हब रखते हों या नास्तिक हो, क़ारिब है तो फिर ये कैसे हो सकता है कि कोई मुस्लमान दूसरों के लिए तकलीफ़ या मुसीबत का मूजिब बन जाए? बल्कि एक सच्चे मुस्लमान की हमेशा यह ख़ाहिश होगी कि वह इन्सानियत को दुख या तकलीफ़ पहुंचाने के बजाय आराम-ओ-सुकून पहुंचाए और लोगों के माबैन मुहब्बत और उख़ुवत क़ायम करे और अमन के क़ियाम का ज़रीया बने। अतः इन्सानी हमदर्दी की इस रूह और इस ईमान के साथ कि अल्लाह तआला की रहमत प्रत्येक चीज़ का अहाता किए हुए है, हम मसाजिद तामीर करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला के हुक्म के अनुसार हम न केवल उसकी इबादत करना ज़रूरी समझते हैं बल्कि बिना किसी भेदभाव रंग-ए-नस्ल समस्त बनीनौ इन्सान के हुक़ूक़ अदा करने का भी प्रयास करते हैं। मसाजिद तामीर करने के इलावा अपने दीन पर ही अमल करते हुए हम इंतेहाई पसमांदा देशों और इलाक़ों में विभिन्न फ़लाही मंसूबे, हस्पताल और मैडीकल क्लीनिक्स भी तामीर करते हैं। और ऐसे लोगों को जो ईलाज करवाने के मुतहम्मिल नहीं हो सकते, उन्हें तिब्बी सहूलयात फ़राहम करते हैं। इसी तरह हम दुनिया के ग़रीब इलाक़ों में स्कूल खोलते हैं ताकि वहां के मुक़ामी बच्चों को तालीम हासिल करने का अवसर फ़राहम किया जाए। हमारी यही आरज़ू और दुआ है कि वे बच्चे जो हमारे स्कूलों में तालीम हासिल करते हैं वह तालीम के ज़रीया ग़ुर्बत की इन ज़ंजीरों से आज़ादी हासिल करें जिनमें उनके ख़ानदान कई नसलों से जकड़े हुए हैं और फिर यह भी कि वे इस तालीम के ज़रीया अपनी क़ौमों और लोकल कम्यूनिटी की भी तरक़्क़ी और ख़ुशहाली का माध्यम बने।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमने Water for Life जैसे प्रोग्राम भी शुरू किए हैं, जिसके तहत दुनिया के दौर उफ़्तादा इलाक़ों में पीने का साफ़ पानी मुहय्या किया जाता है। जबकि साफ़ पानी के एक गिलास को हम मामूली समझते हैं लेकिन तरक़्क़ी पज़ीर दुनिया के लाखों लोगों के लिए ये ज़िंदगी बदल देने वाला और इन्क़लाबी तजुर्बा है। इसी नहज पर हम बहुत से दीगर फ़लाही काम कर रहे हैं और उनके ज़रीया मुस्तक़िल बुनियादों पर ख़िदमत-ए-इन्सानियत में लगे हुए हैं। फिर हम क़ुदरती आफ़ात से प्रभावित इलाक़ों में रीलीफ़ टीमें भिजवाते हैं, जो तकलीफ़ में मुबतला लोगों को बुनियादी अशिया ज़रूरत, इमदाद और ईलाज फ़राहम करती हैं और ये समस्त ख़िदमत बला तफ़रीक़ क़ौम, ज़बान, मज़हब और अक़ीदा के की जाती है। हम इस समस्त ख़िदमत के बदला कोई इनाम नहीं चाहते, हमारा वाहिद उद्देश्य और दिल की ख़्वाहिश बनीनौ इन्सान की तकलीफ़ दूर करना है। हमारा मतलूब-ओ-मक़सूद ख़िदमत-ए-इन्सानियत है क्योंकि इस्लाम ने हमें सिखाया है कि हम न केवल अल्लाह तआला के हुक़ूक़ अदा करें बल्कि उस की मख़लूक़ के भी हुक़ूक़ अदा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मज़ीद यह कि हम इस्लाम के अमन-ओ-आश्ती के पैग़ाम को समस्त दुनिया तक पहुंचाना अपना फ़र्ज़ समझते हैं और हम चाहते हैं कि बतौर अहमदी मुस्लमान हम समस्त दुनिया में अमन और प्रेम फैलाएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया निसन्देह अल्लाह तआला ने इस दौर में जमाअत अहमदिया के संस्थापक मुस्लिमा को मसीह

मौऊद बना कर दुनिया में प्यार और मुहब्बत का पैग़ाम फैलाने के लिए अवतरित फ़रमाया है। आप को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़ीमुश्शान भविष्यवाणी के अनुसार अवतरित किया गया, जिस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि सदियों के रुहानी और अख़लाक़ी ज़वाल के बाद अल्लाह तआला अपने एक फ़िदाई ख़ादिम को मसीह बना कर अवतरित फ़रमाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तलवार उठाने की बजाय समस्त मज़हबी जंगों के ख़ातमा का ऐलान फ़रमाया और अमन, प्यार और एकता का पैग़ाम दिया। आप अलैहिस्सलाम ने बताया कि इस्लाम पर अब ज़ाहिरी हमले नहीं हो रहे और न इबतेदाई इस्लाम की तरह इस दीन को मिटाने की कोशिशें की जा रही हैं। इसलिए इस दौर में मज़हबी जंगों का कोई जवाज़ नहीं है। अतः डैलस के मुक़ामी लोगों को इस मस्जिद से ख़ौफ़ज़दा होने की ज़रूरत नहीं है। मैं ऐसे समस्त लोगों से जिनके ज़हनों में कोई भय या स्वयं निर्मित हूँ, कहता हूँ कि आप तसल्ली रखें कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा की इस नई मस्जिद से केवल और केवल इस्लाम की अमन, बाहमी एहतेराम और रवादारी पर आधारित रोशन तालीमात का ही होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमारी यह तालीम नहीं कि जिन लोगों के अक़ायद हमसे विभिन्न हैं हम उन के ख़िलाफ़ खड़े हो जाएं, बल्कि हम तो उन्हें ख़ुश-आमदीद कहते हैं। हमारी तालीम यह नहीं कि हम विरोध करने वाले पर हमला करें बल्कि हमारी तालीम यह है कि हम उनका और उनके हुक़ूक़ का दिफ़ा करें। विश्वास रखें कि यह मस्जिद बनीनौ इन्सान के लिए मुहब्बत और हमदर्दी का स्रोत होगी। इस मस्जिद में दाख़िल होने वाले समस्त लोगों बेहतरीन रंग में मुआशरे की ख़िदमत करने और मुआशरे की बेहतरी के लिए अपना हिस्सा डालने की प्रयास करेंगे। ये लोग समस्त दुनिया के सामने ऐलान करेंगे कि हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद की अदायगी के लिए यकजा होना ही हक़ीक़ी सफली का ज़रीया है। ये लोग बनीनौ इन्सान को समस्त एतेक़ादात से बाला तर हो कर मुत्तहिद रहने की तहरीक करेंगे और दुनिया में क़ायम-ए-अमन के मुशतर्का उद्देश्य पर तवज्जा मर्कूज़ रखने की तलक़ीन करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अतः निसन्देह, आज दुनिया तबाही के दहाने पर खड़ी है क्योंकि दुनिया-भर की कौमें सयासी, समाजी और मआशी बदअमनी के शदीद तूफ़ानों की लपेट में हैं। यूकरेन में कई महीनों से जंग-ए-जारी है और हमारे ऊपर बदअमनी और जंग के मंडलाते हुए स्याह बादल इस से भी अधिक बड़ी तबाही की तरफ़ इशारा कर रहे हैं। दुनिया के तेज़ी से पोलरायज़ड होने के साथ साथ विरोधी सयासी ब्लॉक्स और इत्तहाद तदरीजन मज़बूत हो रहे हैं। नतीजन दुनिया का अमन-ओ-सुकून दिन प्रीतदिन बर्बाद हो रहा है। कुछ अरसा पहले तक जौहरी हथियार चलाने की धमकी का तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता था, लेकिन अब ऐसी धमकियां तक़रीबन रोज़ाना की बुनियाद पर दी जाती हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया के बिगड़ते हालात देखते हुए अहमदिया मुस्लिम जमाअत कई सालों से उन हालात की संगीनी उजागर करने का प्रयास कर रही है। हम आलमी राहनुमाओं, हुकूमतों और को आगाह करते हैं कि दुनिया में अमन और हम-आहंगी के क़ियाम के वसीअ-तर मुफ़ाद के लिए मौजूदा मतभेदों को पीछे डाल दें। मैंने हमेशा लोगों को अमन की हक़ीक़ी क़दर-ओ-मंजिलत समझाने का प्रयास किया है और उन्हें तफ़र्रुक़ा पैदा करने वाली और ग़ैर मुंसिफ़ाना पालिसीयों के ख़तरात से आगाह करने की प्रयास किया है जो केवल बदअमनी और मायूसियों को जन्म देती हैं जो अंततः लावा बन कर फटती हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हमें अपने राहनुमाओं और सियासतदानों पर-ज़ोर देना चाहिए कि वह इस अंधी खाई से पीछे हट जाएं क्योंकि इस में कोई संदेह नहीं कि अगर आलमी जंग छिड़ जाती है तो यह ऐसी तबाही होगी कि दुनिया ने कभी न देखी हो। निसन्देह उस के तबाहकुन नतायज का हम तसव्वुर भी नहीं कर सकते। बहुत से देशों ने जदीद तरीन हथियार हासिल कर लिए हैं जो केवल एक वार से हज़ारों हज़ार लोग मारने की सलाहीयत रखते हैं। इस से केवल हम ही तकलीफ़ और दर्द में मुबतला नहीं होंगे बल्कि हमारे बच्चे और आने वाली नसलें हमारे गुनाहों का ख़मयाज़ा भुगतेंगी और उनकी ज़िंदगियां तबाह हो जाएँगी हालाँकि उनकी इस में कोई ग़लती भी न होगी। उदाहरण के तौर पर ताबकारी के ज़हरीले असरात ऐसे हैं कि अगर कभी एटम-बम प्रयोग किया जाए तो नसल दर नसल बच्चे शदीद जहनी या जस्मानी नक़ायस के साथ पैदा होंगे। वह जान-लेवा बिमारीयों का शिकार होंगे और ज़िंदगी का दौरानिया कम होगा। निसन्देह वह मासूम जानें हक़ारत से हमारी तरफ़ देखेंगी। वह अफ़सोस करेंगे कि क्यों उनके आबा-ए-ओ- अज्दाद अपनी अना और ख़ुदग़रज़ी की वजह से एक तबाहकुन जंग में पड़ गए जिसने उनकी आने वाली नसलों को जस्मानी, जज़बाती और मआशी तौर पर माज़ूर कर दिया। इस लिए मेरी दिली-ख़्वाहिश और दुनिया के लिए पैग़ाम है कि हमें अपने मतभेदों को एक तरफ़ रखकर मुआशरे में क़ायम-ए-अमन के लिए अनथक मेहनत करनी चाहिए ताकि हम अपनी आने वाली नसलों को ख़ुदा-न-ख़्वास्ता दुख और मायूसी की ज़िंदगियां गुज़ारने पर मजबूर करने की बजाय उनको अच्छे दिनों के माध्यम बन सकें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया क़ायम-ए-अमन के लिए हम सब को अपना अपना किरदार अदा करना चाहिए। जहां भी ज़ुलम या नाइंसाफ़ी हो, हमें उस की मुज़म्मत करनी चाहिए। हमें अपने सयासी क़ायदीन पर-ज़ोर देना चाहिए कि वह अपनी क़ौमों को जंग की तरफ़ धकेलने और इंतेक़ाम और फ़साद की धमकियों के ज़रीये हालात बिगाड़ने की बजाय सिफ़ारत कारी और हिक्मत से आलमी सतह पर और अक़्वाम के माबैन भी कशीदगी कम करने का प्रयास करें। उन्हें इस बात को निश्चित बनाना चाहिए कि दुनिया का अमन और सलामती उनका अव्वलीन उद्देश्य रहे। अमन की इस प्रयास में मुस्लमान, ईसाई, यहूदी, हिंदू, सिख सब अपना किरदार अदा करें। जो लोग ख़ुदा को नहीं मानते और न ही किसी अक़ीदे को मानते हैं वह भी अपना किरदार अदा करें। हमें ख़ुद को अलग-थलग करने और एक दूसरे से डरने की बजाय इन्सानियत की ख़ातिर इकट्ठा होना होगा। मज़हबी लोगों को भी दुनिया में हक़ीक़ी और पायदार अमन के ज़हूर के लिए ख़ुदा की सहायता और रहम तलब करते हुए अपने अपने तरीक़ के अनुसार पुरजोश दुआ करनी चाहिए

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैं दिल की गहिराईयों से दुआ करता हूँ कि दुनिया प्रत्येक किस्म की तबाही-ओ-बर्बादी से महफ़ूज़ रहे। मेरी दुआ है कि जंग और क़तल-ओ-ग़ारत के तवील साय जो हमारे सिरों पर मंडला रहे हैं छट जाएं और अमन-ओ-सलामती का नीला आसमान तलूअ हो। ख़ुदा तआला दुनिया पर रहम फ़रमाए। आख़िर पर मैं दुआ करता हूँ कि यहां डैलस में हमारी मस्जिद समस्त बनीनौ के लिए हमेशा अमन व सलामती की स्थान रहे। अल्लाह करे कि इस की रुहानी किरनें अपने माहौल को रोशन करती रहें और यह इन्सानियत और अमन के निशान के तौर पर हमेशा चमकती रहे। आमीन।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : इन शब्दों के साथ में एक मर्तबा फिर आप सब लोगों का यहां इकट्ठे होने पर शुक्रिया अदा करता हूँ। मैं कांग्रेस मैन, मेयर और शहर की कौंसल का भी शुक्रिया अदा करता हूँ कि उन्होंने अपने ख़्यालात का इज़हार किया है। बहुत शुक्रिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बजकर 10 मिनट पर ख़त्म हुआ। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के इख़तेताम पर मेहमानों ने देर तक तालियाँ बजाईं। इसके बाद डिनर का प्रोग्राम हुआ। खाने के बाद भी कुछ मेहमानों के साथ हुज़ूर अनवर ने गुफ़्तगु फ़रमाई। प्रोग्राम के इख़तेताम पर आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने 8:30 बजे मस्जिद बैतुल इकराम में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब और ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले गए।

(शेष आगे ..)

रिपोर्ट माननीय अब्दुल माजिद ताहिर साहिब
(ऐडीशनल वकील अल्तिबशीर् लंदन, यू.के)
(बहवाला अख़बार बदर उर्दू 24 नवंबर 2022)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 20 July 2023 Issue No. 29

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

देश की रिपोर्ट

जल्सा सालाना गढ़पद, ज़िला बालासोर राज्य ओडिशा का सफल आयोजन

तिथि 4 जून 2023 को बाद दोपहर जलसा शुरू हुआ। पहले इज्लास की कार्रवाई श्रीमान नासिर आलिम साहिब अमीर ज़िला बालासोर की सदारत में शुरू हुई। तिलावत क़ुरआन-ए-करीम श्रीमान मौलवी नसीर ख़ान साहब मुबल्लिग सिलसिला बालासोर ने की। इसका उर्दू अनुवाद श्रीमान अली क़ादिर साहिब मुअल्लिम सिलसिला ने तफ़सीर-ए-सग़ीर से सुनाया। इसके बाद एक उर्दू नज़्म सुंदर आवाज़ में पढ़ी गई। इसके बाद इस इजलास की पहली तक़रीर शीर्षक "हस्ती बारी तआला" श्रीमान नवीदुल-फ़तह साहिब मुबल्लिग और दाईन -ए-ख़ुसूसी राज्य ओडिशा ने की। इसके बाद दूसरी तक़रीर शीर्षक "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़ैरों से हुस्न-ए-सुलूक विनीति ने की। इसके बाद एक उर्दू नज़्म पेश की गई। इसके बाद इस इजलास की आख़िरी तक़रीर "ख़त्म-ए-नबुव्वत की हक़ीक़त व सदाकत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम" के शीर्षक पर श्रीमान मौलवी फ़ज़्ल नईम साहिब दाईन -ए- ख़ुसूसी दावत इल-ल्लाह जुनूबी हिंद ने की। शाम साढ़े छः बजे पहला इज्लास उत्तम ढंग से समाप्त हुआ।

दूसरे इज्लास की कार्रवाई ठीक शाम सात बजे शुरू हुई। इस इज्लास की सदारत श्रीमान ज़हूरुद्दीन ख़ान साहब सदर जमाअत व नायब अमीर ज़िला बालासोर ने की। तिलावत क़ुरआन-ए-मजीद श्रीमान हाफ़िज़ गुलिस्तान अहमद साहिब नए की। ओडिया अनुवाद श्रीमान मौलवी मक़सूद अली साहिब ने पढ़ कर सुनाया। इसके बाद एक नज़्म ओडिया भाषा में श्रीमान रोशन अहमद ख़ान साहब ने सुनाई। इज्लास की पहली तक़रीर ओडिया भाषा में श्रीमान फ़ज़्ल हक़ ख़ान साहब मुबल्लिग सिलसिला कटक की हुई। इसी तरह मज़ीद दो तक़ारीर जमाती वक्ताओं की हुईं। ग़ैर मुस्लिम साहिबों को भी इज़हार राय करने का अवसर दिया गया। रात दस बजे दुआ के साथ यह इज्लास समाप्त हुआ। इस जल्सा में 700 के क़रीब हाज़िरी रही। जलसे की ख़बर मुख़्तलिफ़ अख़बारों में प्रकाशित हुई। अल्लाह तआला इस जलसे को हर लिहाज़ से बाबरकत करे। आमीन।

(अकबर ख़ान, मुबल्लिग इंचार्ज जमाअत अहमदिया बालासोर, ओडिशा)

★ ★ ★

नज़ारत नश्र-व-इशाअत की ओर से प्रकाशित होने वाली पुस्तक का परिचय

ख़िलाफ़त का महत्त्व तथा उसके लाभ

यह पुस्तक 2008 ई. में ख़िलाफ़त के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर लिखी गई थी, इस पुस्तक की यह विशेषता है कि लेखक ने इस में ख़िलाफ़त से जुड़े हर पहलू को बहुत अच्छी तरह से वर्णन किया है। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जो ख़िलाफ़त चली (अर्थात ख़िलाफ़त ए राशिदा) के दौर का भी संक्षेप में वर्णन किया है फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आप के बाद जो ख़िलाफ़त ए अहमदिया का निज़ाम जारी हुआ उसका बहुत विस्तार से और सुंदर शैली में वर्णन किया है। सभी ख़लीफाओं की जीवनी और उनके दौर में होने वाली जमात की उन्नति का वर्णन किया गया है। हर ख़लीफा के दौर में जो जमाती उन्नति हुई, घटनाएं घटीं, मस्जिदें बनीं, जो स्कीम लागू हुईं, कबूलियत ए दुआ के लिए वृतांत इत्यादि का उल्लेख किया गया है। खिलाफत के बारे में इतने विस्तार से लिखी यह पहली पुस्तक है जो पाठकों को बहुत लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

★ ★ ★

Tahir Ahmad Zaheer
M.Sc. (Chemistry) B.Ed.
DIRECTOR
طالب دعا
Tahir Ahmad Zaheer
Director oxford N.T.T.College
Jaipur (Rajasthan)
TEACHER TRAINING
OXFORD N.T.T. COLLEGE
(Teacher Training)
(A unit of Oxford Group of Education)
Affialiated by A.I.I.C.C.E. New Delhi 110001
0141-2615111- 7357615111
oxfordnttcollege@gmail.com
Add. Fateh Tiba Adarsh Nagar, Jaipur-04
Reg. No. AIICCE-0289/Raj.

HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
اب دیکھتے ہو کیسا رجوع جہاں ہوا   اک مرجع خواص یہی قادیاں ہوا
HUSSAIN CONSTRUCTIONS & REAL ESTATE
(ہمارا عزم صاف ستھرا کاروبار) (SINCE 1964)
क़ादियान में घर, फ्लैट्स और बिल्डिंग उचित कीमत पर निर्माण करवाने के लिए सम्पर्क करें, इसी प्रकार क़ादियान में उचित कीमत पर बने बनाए नए और पुराने घर / फ्लैट्स और ज़मीन ख़रीदने और Renovation के लिए सम्पर्क करें
(PROP: TAHIR AHMAD ASIF)
contact no. : 87279-41071, 83603-14884, 75298-44681
e mail : hussainconstructionsqadian@gmail.com

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad